कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः12, अंकः04–05 जनवरी –फरवरी 2013

मुख्य संरक्षक

श्री बुद्धिसेन शर्मा

संरक्षक सदस्य

डॉ0 तारा सिंह, मुंबई

श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया,उ.प्र.

सम्पादक

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

प्रबंध सम्पादक

श्रीमती जया

विज्ञापन प्रबंधक

महेन्द्र कुमार अग्रवाल

सहयोग राशि

एक प्रति	: रु0 10/–
वार्षिक	: रु0 110/–
पंचवर्षीय	: रु0 500/–
आजीवन सदस्य	: रु0 1500/–
संरक्षक सदस्य	: रु0 5000/–

संपादकीय कार्यालय

एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0ः 09335155949

ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं।

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस, बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित कराया गया.

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

इस अंक में......

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' व उनका रचना संसार.. 06
-गोकुलेश्वर कुमार द्विवेर्दी

संत शिरोमणी गुरू रविदास (रैदास)..............36
-देवदत्त शर्मा 'दाधीच'

अपनी बातः आखिर हम कब सुधरेंगें	04
अतिथि संवाद	05
साक्षात्कारः रामकृष्ण गर्ग	08
परिचर्चाः बलात्कार की घटनाओं के लिए दोषी कौन	10
व्यंग्यः हिन्दी और मच्छर-शुभ्राशु पांडेय	13
ग़ज़लें	
बुद्धिसेन शर्मा	15
सागर होशियारपुरी, सलाहग़ाज़ीपुरी, तलब जौनुपरी	16
जफ़र सईद, आशीफ गाज़ीपुरी	18
रमेश नाचीज़, सौरभ पांडेय	19, 20
मो. फरहान खान, मो. चांद बाबू, वीनस केसरी	25
इम्तियाज़ अहमद गाज़ी	26
हुमा फात्मा, अवधेश अनुरागी, पीयूष मिश्र	28
कविताएँ	
सन्त कुमार टंडन 'रसिक'	15
विजय लक्ष्मी विभा, कैलाश नाथ पाण्डेय	17
डॉ० शंभुनाथ त्रिपाठी 'अंशुल', डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय	18
देवनाथ सिंह देव	19
रविनंदन सिंह, बालकृष्ण पाण्डेय, देवयानी	20
विपिन श्रीवास्तव, विवेक सत्याशु, विमल वर्मा	21,22
डॉ० रतन कुमारी वर्मा, कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव	23
कृष्ण कुमार यादव, ईश्वर शरण शुक्ल, राजेश कुमार सिंह	24
डॉ. मोनिका मेहरोत्रा 'नामदेव', शैलेन्द्र जय	26
सृष्टि कुशवाहा, अम्बरीश शुक्ल, शादमा बानो, अविनाश गौरव	27, 28
सुशील द्विवेदी, राहुल कुमार गौतम, अंकिता साहू	29
पूनम किशोर, भानू प्रकाश पाठक	30
बाल कहानी : सच्चा शिष्य- डॉ. विनय कुमार मालवीय	34
लघु कथाः निर्णय-डॉ.दुर्गा शरण मिश्र	31
हिन्दीत्तर भाषी रचनाकारः बी.सीताम्बा	36
आपकी डाक	38
स्वास्थ्य	39
साहित्य समाचार-	9, 30, 32, 35, 37, 40
समीक्षा	42

अपनी बात

आखिर हम कब सुधरेंगे?

हमारी यह मनोवृत्ति बन गई है कि जब भी देश में कोई घटना, दुर्घटना होती है तो उसे हम पुलिस, सरकार और कानून पर जिम्मेदारी थोपकर अपना पल्ला झाड़ लेते हैं और चौराहों, पार्कों, टी.वी. चैनलों पर पानी पी-पीकर कोसते हैं. यह प्रक्रिया हर छोटी-बड़ी घटना-दुर्घटना पर दोहरायी जाती है. इधर एक दो वर्ष से अन्ना के आंदोलन का असर यह हुआ कि जनता अब सड़क पर उतरने लगी है. यह लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत हैं. कम से कम हमारे जनप्रतिनिधि कुछ तो चेतेंगें?

हमारे देश में जबसे इलेक्ट्रानिक व प्रिंट मीडिया की सक्रियता बढ़ी है, तबसे कुछ बलात्कार की घटनाएं बाहर आने लगी है. पहले बलात्कार की घटनाएं समाज के डर से दब जाती थी या दबा दी जाती थी. आज तो कोई भी दिन शायद ही गुज़रे जिस दिन बलात्कार घटनाएं न होती हों उनमें से कुछ घटनाएं मीडिया में भी आ जाती है. दिल्ली के बस के सामूहिक बलात्कार व घृणित कुकृत्य ने हमें इस पर सोचने व आंदोलन करने को मजबूर कर दिया. लेकिन फिर वही सवाल आखिर इसके लिए जिम्मेदार कौन? हम, हमारी पुलिस, सरकारें, हमारा कानून, हमारा पहनावा, पाश्चात्य संस्कृति, हमारी मानसिक विकृत्ति या बलात्कार के लिए सख्त कानून का न होना. कानून तो बहुत सारे हैं भ्रष्टाचार, बलात्कार, हत्या के लेकिन क्या ये रूक गये, नहीं. पुलिस किस-किस को सुरक्षा देगी क्योंकि ऐसी घटनाएं तो घरों के सगे संम्बन्धियों द्वारा भी की जाने लगी हैं. सरकार कानून बना सकती है और कुछ नहीं कर सकती. अब बचते हैं हम यानि हमारा समाज. हम अपने आपको नहीं देखते कि हम क्या कर रहे हैं. अगर हम कहीं पर किसी लड़की को किसी लड़के द्वारा छेड़ते हुए देखते हैं तो उसे अनदेखा कर निकल जाते है. न तो स्वयं कुछ पहल करते है और न पुलिस को ही सूचना देते हैं. माना कि हमारी पुलिस इतनी सक्रिय नहीं है लेकिन पुलिस के नाम पर कुछ तो होगा. आजकल लड़कियो के पहनावे को देखिए तो शर्म सी आती है. हम नकल करते है पश्चिमी देशों की पहनावा तो विदेशी अपनाकर हम प्रगतिशील, एडवांस होने का ढोल पीटते हैं मगर हमारी मानसिकता व हमारी संस्कृति वहीं पुरातन है. कपड़ों में लिपटी हुई नारी, सलवार-समीज पहनी हुई लड़की, आंधा अंग प्रदर्शन करती हुई नारी नहीं.

बलात्कार की घटनाओं के लिए सबसे अधिक दोषी हम, हमारा समाज व पाश्चात्य संस्कृति की नकल है. कुछ लोग इसे नारी विरोधी विचार करार देंगे. लेकिन विरोध के स्वर के चलते हम सच्चाई से मुँह नहीं मोड़ सकते. प्रकृति ने ही पुरुष व नारी की शारीरिक बनावट, क्षमता में भेद किया है. नारी की अपनी सीमाए हैं. बलात्कार की घटनाओं, छेड़खानी से बचने के लिए हमें समयानूकुल बनना पड़ेगा. जब पुरुष जाति रात्रि में सुरक्षित नहीं घूम सकती है तो हम ऐसे में कैसे यह कल्पना करें कि नारी घूम लेगी. जिस पाश्चात्य संस्कृति की हम बात करते हैं वहां का रहन-सहन, पहनावा, कानून व्यवस्था अलग है. वहां वही वस्त्र पहने सभी दिखते है. पुरुष की तो बात ही छोड़िए अगर किसी मुहल्ले की कोई लड़की रात को १२ बजे घर लौटते हुए दिख जाएगी तो सबसे पहले मुहल्ले की औरते ही कानाफूसी चालू कर देगी. पुरुष तो बात में देखेगा, विरोध करेगा. हमारे कपड़े पाश्चात्य अवश्य हो गये हैं लेकिन सोच नहीं.

दूसरी बात जब हम विधायक/सांसद ही बलात्कारियों को चुनते हैं तो कैसे सोच लेते है कि वह बलात्कारी, बलात्कारियों के खिलाफ कड़ा कानून बनायेगा.

तीसरी बात हमें अपनी सुरक्षा स्वयं करनी होगी, जैसे लड़कियों को इन आतताइयों से लड़ने का प्रशिक्षण स्कूल, कॉलेजों में दिलवाकर, सभ्य कपड़े पहनकर, समय से घर बाहर आकर, अपने बच्चों को स्त्रियों के प्रति समादर भाव रखने की शिक्षा देकर, इज्ज़त लूटती किसी नारी की रक्षा करके, अश्लील धारावाहिकों, फिल्मों को न देखकर, इंटरनेट व फेसबुक का सीमित इस्तेमाल करने की इज़ाजत देकर, उन पर निगरानी रखकर यह लड़के/लड़कियों दोनों के लिए करना होगा.

अतिथि संवाद

यह विशेषांक साहित्य की समग्रता के साथ पाठकों को समर्पित है

आज साहित्य के नाम पर जो 'सब कुछ' प्रस्तुत करने का दौर चल रहा है उस परिदृश्य में साहित्य के सार्थक संदर्भो पर केन्द्रित पत्रिका निकालना मुश्किल नहीं तो कठिन अवश्य है. इस परिप्रेक्ष में 'विश्व स्नेह समाज' का देश भर के पाठकों/साहित्यकारों द्वारा बराबर प्रोत्साहन मिलता आ रहा है. साहित्यिक पत्रिकाओं की श्रृंखला में इस पत्रिका की अपनी अलग पहचान है. यह खरगोश की चाल चलकर सो जाने वाली नहीं बल्कि कछुए जैसी मंद गति चलकर अपने लक्ष्य और दृष्टिकोण पर अडिग रहती है. यह सीमित संसाधानों के बीच निकलने वाली साहित्य के हर विधा से सरोकार तक पहुंचाना मुश्किल होता है.

समाज में बढ़ती दिनोदिन संवेदनहीनता के कारण साहित्यिक पत्रिकाओं की जिम्मेदारी और बढ़ गई है. अब उसे अपनी साहित्यिक प्रतिबद्धता के साथ मौजूदगी करानी होगी. आज देश के हर व्यक्ति के जेब में हजार रुपए का मोबाइल 'डबल सिम' के साथ भले मौजूद है लेकिन देश भर में मात्र ३ करोड़ समाचार पत्र ही बिकते हैं और १५ लाख लोग मासिक पत्रिकाएं खरीदकर पढ़ते हैं. शेष या तो रुचि नहीं रखते या मुफ्त में पढ़ने के प्रति प्रतिबद्ध रहते हैं.

ऐसे समय में 'विश्व स्नेह समाज' मासिक पत्रिका का यह विशेषांक साहित्य की समग्रता के साथ पाठकों को समर्पित है. इसमें कविता, कहानी, व्यंग्य, साक्षात्कार, लघुकथा व परिचर्चा को शामिल किया गया है. यदि हम इस अंक में कविता की बात करें तो इसमें एक तरफ जहां 'पगली हां सभाल ले कैसे छूट रहा तेरा आंचल' जैसे छायावादी सौन्दर्य प्रेम की झलक है वहीं 'श्वानों को मिलता वस्त्र दूध, भूखे बच्चे अकुलाते है' जैसी सामाजिक वैष्मयता भी है. नए हस्ताक्षर की कविताओं में नई कविता की 'पढ़िए गीता बनिए सीता, फिर भी रुप में लगा पलीता' जैसी जीवन की समग्रता नहीं हैं बल्कि १७ वर्षीय कवि सुशील द्विवेदी 'सुन रे मानव! मैं अतल वितल पाताल तोड़, भूमि की चट्टान तोड़.......के माध्यम से मानव को सचेत करने का जज्बा नजर आता है.

इस अंक में जहां इलाहाबाद से सरोकार रखने वाले वरिष्ठ साहित्यकारों सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', बुद्धिसेन शर्मा, संत कुमार टंडन 'रसिक', सागर होशियारपुरी, ग़ज़लकर तलब जौनपुरी, विजय लक्ष्मी विभा, कैलाश नाथ पाण्डेय 'अंशुल', डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय, रमेश नाचीज़, कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव की रचनाएं शामिल हैं, वहीं सौरभ पांडेय, डॉ. रतन कुमारी वर्मा, विवेक सत्यांशु, कृष्ण कुमार यादव, इम्यिाज़ अहमद गाज़ी, वीनस केसरी, सृष्टि कुशवाहा व अंकिता साहू की रचनाएं जीवन और जीविका के संदर्भो को समेटे, प्रकृति, विसंगति, आदर्श, अलगाव, द्वंद, प्रेम, चेतना, संबंध और दर्द को निरुपित कर रही है.

साथ ही इस अंक में दामिनी की दुर्दशा पर केन्द्रित बुद्धिजीवियों के विचार व्यंग्य, लघुकथा और स्थायी स्तंम्भ शामिल है. हमारे अत्यंत शुभेच्छु एवं आत्मीय श्री गोकुलेश्वर द्विवेदी जी ने अपने अथक प्रयास में युवा वर्ग की रचनाओं कसे संकलित करके जो यथेष्ठ कार्य किया है वह सराहनीय है. उम्मीद है पत्रिका का यह विशेषांक खास-पहचान बनाएगा. अंक छपने वाला था तभी प्रखर हिन्दी सेवी व न्यायविद प्रेमशंकर गुप्त हमारे बीच नहीं रहे 'विश्व स्नेह समाज' की तरफ से विनम्र श्रद्धांजलि. इस अंक का मूल्यांकन विश्लेषण और परीक्षण आपके लिए समर्पित है.

धन्यवाद

ईश्वर शरण शुक्ल

यह अंक आपको कैसा लगा. अपने विचारों से हमें अवगत करायें. आपके विचारों से हमें आगामी अंकों में और निखार लाने में सहूलियत होगी. संपादक

आवरण परिचर्चा

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' व उनका रचना संसार

-गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', एक आधुनिक हिंदी के सबसे महत्वपूर्ण कवियों में से एक थे. २१ फरवरी १८९६ को बंगाल में मिदनापुर के एक ब्राह्मण परिवार (मूल रूप से उत्तर प्रदेश के उन्नाव) में जन्म हुआ. हालांकि बंगाली के एक छात्र, निराला शुरू से ही संस्कृ त में गहरी दिलचस्पी ली. बंगाली, अंग्रेजी, संस्कृत, और हिन्दी में अर्जित ज्ञान के माध्यम से, वह विभिन्न भाषाओं पर अधिकार बना लिए.

निराला जी का जीवन लघु अवधि को छोड़कर, दुर्भाग्य और त्रासदियों के एक लंबा दृश्य था. उनके पिता पंडित रामसहाय त्रिपाठी, एक सरकारी कर्मचारी थे. बचपन में ही उनकी मां की मृत्यु हो गयी थी. निरालाजी बंगाली माध्यम से शिक्षा अर्जित किए थे. हालांकि मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वह घर में संस्कृत और हिन्दी साहित्य पढ़कर अपनी शिक्षा जारी रखी. उन्होंने श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, मधुसूदन दत्त और रवींद्रनाथ टैगोर जैसे व्यक्तित्व से प्रेरणा ली.

कम उम्र में ही शादी के बंधन में बंध गये. अपनी पत्नी मनोहरा देवी के आग्रह पर निराला जी ने हिन्दी सीखी. जल्द ही उन्होंने हिन्दी कविताओं के बजाय बंगला लेखन शुरु कर दिया. एक बूरे बचपन के बाद निराला ने अपनी पत्नी के साथ कुछ अच्छे साल बिताये लेकिन ये अच्छे साल अल्पकालिक थे. जब वह २० वर्ष के थे तभी उनकी पत्नीी का निधन हो गया और बाद उनकी एक बेटी जो विधवा थी वह भी समाप्त हो गयी. उनका जीवन वित्तीय संकट से जुझते हुए बीता. वे कई प्रकाशकों के लिए प्रुफ रीडर के रूप में कार्य किए. उनके अंतरमन में एक विद्रोही व्यक्तित्व था. वे सामाजिक और समाज में अन्याय और शोषण के खिलाफ जोरदार लिखें.

निरालाजी ने जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा के साथ मिलकर छायावाद का बीणा उठाया. वे छंदों के माध्यम से शोषण के खिलाफ अपने विरोध की आवाज उठाई. वह समामेलित वेदांत, राष्ट्रवाद, रहस्यवाद, प्रकृति और अपने काम में प्रगतिशील मानवतावादी आदर्शों से प्यार किए. अपने विषयों के सूत्र इतिहास, धर्म, प्रकृति, पुराणों और समकालीन सामाजिक और राजनीतिक सवाल शामिल किए. उन्होंने अपनी कविताओं में रिक्त कविता का उपयोग शुरू किया. वह प्रकृति के सौंदर्य बोध, प्यार, व्यक्तिगत दृष्टिकोण पर कलम चलाकर छायावाद के मुख्य सिद्धांतों की स्वतंत्रता की शुरुआत की. उनकी बहुमुखी प्रतिभा ही है, जो वे कविता की एक नई शैली की शुरुआत कर उसमें एक छद्म नाम हासिल कर लिये.

निराला जी का १५ अक्टूबर १९६१ को इलाहाबाद में निधन हो गया. हिन्दी साहित्य में उनका योगदान दुनिया के वैचारिक लोगों के लिए उल्लेखनीय है. निराला साहित्य की कुछ लोग बहुत आज भी बहुत प्रशंसा कर रहे है. इस समय निराला जी के नाम से एक पार्क, एक उद्यान, एक सभागार, एक प्रेक्षागृह और उन्नाव जिले में महाप्राण निराला नाम से एक महाविद्यालय भी है. उनकी एक मूर्ति दारागंज के मुख्य चौराहे पर स्थापित है. यह वह स्थान है जहां निराला जी अधिकांश समय रहते थे. उनका परिवार अभी भी दारागंज, इलाहाबाद में रहता है.

उनकी कविता की शैली, अपने समय के लिए क्रांतिकारी, अकसर अप्रकाशित अपने अपरंपरागत प्रकृति के कारण था.

वह उसके छंद के माध्यम से शोषण के खिलाफ अपने विरोध की आवाज उठाते थे. उन्होंने अपनी कविताओं में रिक्त कविता का उपयोग शुरु किया. उनकी कविता सरोज स्मृति एक सबसे बड़ी में से एक है. अपनी बेटी के लिए उनकी भावनाओं को दर्शाता है.

निराला का रचना संसार

कविताएंः राम की शक्ति पूजा, धवनी, सरोज स्मृति, अनामिका, गीतिका, कुकुरमुत्ता, अदीमा, बेला, नये पत्ते, अर्चना, अराधना, तुलसीदास, जन्म भूमि, जागो फिर एक बार

उपन्यासः अप्सरा, अल्का, प्रभावती, निरुपमा, चमेली, छोटी की पुकार, काले कारनामे, दिवानों की हस्ती

लघु कहानियांः चतुरी चमार, शुकुल की बीवी, सखी, लिली, देवी

गद्यः प्रबंध-परिचय, प्रबंध-प्रतिभा, बंगभाषा का उच्चारण, रविन्द्र कविता कानन, प्रबंध-पद्य, प्रबंध-प्रतिमा, चाबुक, कुल्लीभट, बीलेसुर बकरीहा,

अनुवादः आनंद मठ, विश्व-वृक्ष, कृष्ण कांत का विल, कपल कुंडला, दुर्गेश नंदिनी, राज सिंह, राजरानी, देवी चौधरानी, युग्लनगुलिया, चद्रशेखर, रजनी, श्री रामकृष्ण वचनामृत, भारत में विवेकानंद, राजयोग

भारतीय सिनेमा में निराला की कविताः हिम्मत करने वालों की हार नहीं होती, हिन्दी फिल्म मैंने गांधी को नहीं मारा-२००५ निर्माता अनुपम खेर.

तोड़ती पत्थर

वह तोड़ती पत्थर
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर-
वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन,
गुरू हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार
सामने तरू-मालिका अट्टालिका, प्राकार।
चढ़ रही थी धूप
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रुप
उठी झुलसाती हुई लू,
रूई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगी छा गई,
प्राय हुई दुपहर
वह तोड़ती पत्थर।
देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि सेढ
जो मार खा रोई नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार
एक क्षण के बाद वह कंपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा-
'मैं तोड़ती पत्थर।'

विश्व स्नेह समाज के 10 वार्षिक सदस्य बनायें और 250/-रुपये की पुस्तकें उपहार में पायें.

10 सदस्यों के नाम व पते सहित रुपये 1100/मात्र की राशि धनादेश/ड्राफ्ट द्वारा भेजने का कष्ट करें। विश्व स्नेह समाज मासिक, एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद- 211011, उ.प्र.

साक्षात्कार

तेते पांव पसारिए जेते लंबी सौरः रामकृष्ण गर्ग

समाज में कुछ लोग ऐसे होते हैं जो करते तो बहुत कुछ है मगर कहीं चर्चा में नहीं आते. उनके किये गये कार्यो से देश व समाज को बहुत कुछ मिलता है. जो कम करते है वे अधिक प्रकाश में आते हैं. लेकिन कुछ लोग चुपचाप अपने मिशन के प्रति बिना किसी प्रचार-प्रसार के कार्यो को अंजाम देते रहते हैं. उन्हें केवल कुछ लोग ही जानते हैं. उनमें से ही एक है इलाहाबाद के सामाजिक व राष्ट्रीय चिन्तक श्री राम कृष्ण गर्ग. जो बचपन में अपने मित्रों को सहयोग करते थे आगे चलकर अपने अधीनस्थों, सहयोगियों व अन्य लोगों को अपने कठिन परिश्रम से प्राप्त अनुभवों को बांटने का काम करते रहते हैं. हम समाज सेवी कहलाना तो पसंद करते है लेकिन समाज सेवा नहीं करते. श्री गर्ग जी समाज सेवी व चिन्तक तो है, समाज सेवा करते है लेकिन कहलाना पसंद नहीं करते है. अपने जीवन के कटु अनुभवों से प्राप्त सीख को दूसरों को बांटने में जी जान से तत्पर रहते हैं. आप ऐसे व्यक्तित्व व कृतित्व के धनी व्यक्ति है जिन्होंने बड़े-बड़े वरिष्ठ वकीलों तक को पछाड़ दिया है. कई अनपढ़, कम पढ़े-लिखे, कम अनुभवी लोगों को सरकारी भ्रष्टाचार, अनावश्यक रूप से परेशान करने जैसी समस्याओं से निजात दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते रहते हैं. अपने व्यवसायिक कार्यो को तिलांजलि देकर दूसरों के सरकारी/गैर सरकारी कार्यो के जवाब लिखाने को तत्पर रहने वाले रामकृष्ण गर्ग का जन्म 13 जुलाई 1942 को अपने नाना के घर बहराईच में हुआ. मूल रूप से

कानुपर के निवासी स्व. श्रीश्रीकृष्ण गर्ग के ज्येष्ठ पुत्र, पांच (गोपीकृष्ण गर्ग, राधा कृष्ण गर्ग, बाल कृष्ण गर्ग व हरिकृष्ण गर्ग) भाइयों के ज्येष्ठ भ्राता व तीन पुत्रों (अशोक कुमार गर्ग, पवन कुमार गर्ग व अनिल गर्ग) व एक पुत्री के पिता श्री गर्ग की शिक्षा दीक्षा कानपुर में ही हुई. पहली नौकरी 1962 में लक्ष्मी रतन काटन मिल के मालिक श्री रामरतन गुप्ता के गोंडा से प्रत्याशी बनने पर तीन माह तक उनका चुनावी कार्य संभालकर प्रारम्भ किया. उसके बाद पारिवारिक दुकान कों सभाला. जुलाई 1963 से एक ठेकेदार के लखनऊ में कार्य करने लगे. उसी ठेकेदार के कार्य को संभालने 1964 में इलाहाबाद आये और 1969 तक कार्य करते रहे और यहीं के होकर रह गये. 1969 में अपने पिता की मृत्यु के कारण कानपुर आवागमन बढ़ा. उसी समय कानपुर के एक ठेकेदार का काम संभाला और 1985 में स्वतंत्र रूप से व्यवसाय चालू किया. जिसमें कटरा में बिजली की दुकान व ठेकेदारी शामिल थे. 1991 में अपने नवनिर्मित निजी आवास सुलेम सराय आ गये.

एक तरफ हमारे समाज में जहां दहेज के लिए बहुएँ जलाई व मारी जा रही है वहीं श्री गर्ग जी ने अपने भाइयों, बहनों व पुत्रों की शादी में न तो एक रुपये दहेज लिए और न दिए है. यह अपने आप में एक मिसाल हैं.

कदम से कदम मिलाकर हर पल, हर काम से साथ निभाने वाली धर्मपत्नी श्रीमती विमलेश गर्ग के मनोबल, प्रेरणा व सानिध्य ने व्यवसाय को ऊँचाई प्रदान करने में महती भूमिका अदा की.

प्रस्तुत है उनसे संपादक **गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी** से बातचीत के महत्वपूर्ण अंशः-

प्रश्नः आपके ठेकेदारी व्यवसाय में सबसे चुनौती पूर्ण कार्य कौन सा रहा?

उत्तरः 1971 में भारत पाकिस्तान युद्ध के समय शरणार्थियों के लिए 15

दिनों के भीतर 24घंटे कार्य करके जनवरी की भीषण ठंढ में आवासीय व्यवस्था करना.

प्रश्नः आपके जीवन का कटु अनुभव?

उत्तरः ऊपर का व्यक्ति केवल अपने बारे में सोचता है. उसकी कथनी और करनी में बहुत बड़ा अंतर होता है.

प्रश्नः आप आर.एस.एस. से कब जुड़े.

उत्तरः 1965 में।

प्रश्नः पूर्व के आरएसएस व वर्तमान आरएसएस में क्या अंतर है?

उत्तरः पहले कार्यकर्ता अभाव में जीकर, जूझकर कार्य करता था और अब सुविधा भोगकर केवल दिखावा करता है।

प्रश्नः वर्तमान राजनीति के बारे में क्या कहना चाहेंगे?

उत्तरः वर्तमान राजनीति काज़ल की कोठरी है।

प्रश्नः अन्ना, रामदेव, केजरीवाल व दिल्ली रेप आंदोलन में किसको सबसे अधिक सफल आंदोलन मानते हैं?

उत्तरः दिल्ली रेप आंदोलन सबसे सफल आंदोलन रहा. अन्ना का व्यक्तित्व है. उनके आंदोलन की आत्मा को स्वार्थी तत्वों ने कुचल दिया. लेकिन इसका एक फायदा हुआ कि आम आदमी के मन में अन्याय के खिलाफ खड़े होने की हिम्मत आ गयी.

प्रश्नः भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए क्या किया जाना चाहिए?

उत्तरः१. लोगो की आमदनी पर बगैर स्रोत पूछे हुए टैक्स लगाने का प्राविधान किया जाना चाहिए।

२. चूंकि बगैर भ्रष्टाचार के कोई काम नहीं होता इसलिए प्रत्ये कार्य के लिए रेट तय कर देना चाहिए।

३. सम्पूर्ण व्यापार पर सरकारी आधिपत्य समाप्त किया जाना चाहिए यानि मुक्त व्यापार. सरकार केवल शासन कार्य देखें.

४. सरकारी खर्चे पर चुनाव होने चाहिए.

प्रश्नः बलात्कार की घटनाओं के लिए दोषी कौन है?

उत्तरः दिखावा

प्रश्नः क्या लड़कियों के पहनावे को इसका जिम्मेवार मानते हैं?

उत्तरः बिल्कुल

प्रश्नः कहीं यह पाश्चात्य संस्कृति अपनाने का परिणाम तो नहीं?

उत्तरः हम पाश्चात्य संस्कृति को अधकचरे में अपना रहे हैं. पाश्चात्य संस्कृति ईट, ड्रींक एण्ड बी मैरी (खाओ, पिओ और मस्त रहो) पर निर्भर है. भारतीय संस्कृति सीता, सावित्री, गार्गी द्रोपदी की संस्कृति पर आधारित है.

प्रश्नः क्या इसे आप मानसिक विकृति मानते हैं?

उत्तरः दूरदर्शन व चैनलों के प्रोग्राम में और भारतीय संस्कृति में कोई मेल नहीं है. क्या पाबंदी लगाने से शराब, सिगरेट, तम्बाकू व अन्य नशीले पदार्थो का सेवन कम या बंद हो पाया है.

प्रश्नः बलात्कार की घटनाओं को रोकने के लिए क्या उपाय कियाा जाना चाहिए?

उत्तरः दिखावा बंद होना चाहिए. अगर आप यह समझते हैं कि आप सुरक्षित है तो घरों में ताला न लगाए. घरों में ताला हम आम आदमी से सुरक्षा के लिए लगाते है, चोरों से सुरक्षा के लिए नहीं.

प्रश्नः पाठकों को क्या संदेश देना चाहेंगें?

उत्तरः जितनी चादर हो उतना ही पांव पसारना चाहिए।

पत्रकारों की सुरक्षा, संरक्षा एवं अधिकारों के लिए गठित

मीडिया फोरम ऑफ इंडिया

- पत्रकारों के लिए निःशुल्क चिकित्सा, आवास, समाचार संकलन हेतु निःशुल्क ट्रेन/बस यात्रा पास, वृद्ध पत्रकारों को मासिक आर्थिक मदद दिलवाने हेतु संघर्ष करना और सहयोग के लिए सरकार को प्रेरित करना.
- पत्रकारों का वार्षिक दुर्घटना व स्वास्थ्य बीमा करवाना.
- देश भर के त्रैमासिक, मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक, दैनिक समाचार पत्रों/पत्रिकाओं के संपादकों/पत्रकारों को समय-समय पर निःशुल्क शिविर, गोष्ठी, सम्मेलन, अधिवेशन करके सहयोग एवं मार्गदर्शन करना।
- पत्रकारिता के उत्थान के समर्पित पत्रकारों/संपादकों को समय-समय पर सम्मानित करना। पत्रकारों, संपादकों के हितों के लिए संघर्ष करना, कानूनी लड़ाई लड़ना और आपदा/दुर्घटना के समय सहयोग करना।

विस्तृत जानकारी व सदस्यता ग्रहण करने के लिए सम्पर्क करेंः
10 रीवां बिल्डिग, लीडर रोड, (रेलवे जंक्शन के सामने) इलाहाबाद–211003, उ.प्र. ☎(का0)0532-2401671, 09935959412, 9335155949 **Email:** media_fi@rediffmail.com

परिचर्चा

बलात्कार की घटनाओं के लिए दोषी कौन?

दिल्ली में हुई बलात्कार बीभत्स घटना ने पूरे देश को झकझोर दिया. आम आदमी के मन में गुस्से का गुबार फूट पड़ा. चैनलों पर दिनभर हफ्तों चर्चाएँ चलती रहीं. इन्हीं चर्चाओं में से निकले कुछ बिन्दुओं पर हमने इलाहाबादियों के विचार जानने का प्रयास किया. यह सर्वेक्षण नीचे दिए प्रश्नों पर किए गए हैं. जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के लगभग एक हजार सुविद्धों से विचार लिये गये. सबके विचार देने सम्भव नहीं है. कुछ खास विचार प्रस्तुत हैः **हमारे प्रश्नः**

1. बलात्कार की घटनाओं के लिए दोषी कौन है?

2. क्या लड़कियों के पहनावे को इसका जिम्मेवार मानते हैं?

3. कहीं यह पाश्चात्य संस्कृति अपनाने का परिणाम तो नहीं?

4. क्या इसे आप मानसिक विकृति मानते हैं?

5. बलात्कार की घटनाओं को रोकने के लिए क्या उपाय किया जाना चाहिए?

पाश्चात्य संस्कृति अपनाना जिम्मेवार है.

बलात्कार की घटनाओं के लिए 75 प्रतिशत लड़कियां व 25 प्रतिशत असंस्कारिक लड़के दोषी है. लड़कियों का पहनावा इसके लिए निश्चित रुप से जिम्मेवार है. इसके प्रमाण है पहनावे पर चयन होने वाले सेक्सी पुरुष, सेक्सी महिला, सेक्सी मांडल जो पहनावे को देखकर चयनित किए जाते हैं. पाश्चात्य संस्कृति अपनाना इसके लिए 100 प्रतिशत जिम्मेवार है. अगर आप संस्कारिक है तो मानसिक विकृति नही आएगी और असंस्कारिक है तो मानसिक विकृति को आएगी ही. बलात्कार की घटनाओं को रोकने के लिए नैतिक शिक्षा व सांस्कारिक शिक्षा पर जोर दिया जाना चाहिए. मां-बाप को इसके प्रति सजग होना चाहिए. पहनावे पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए. विद्यालयों में भी इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए. **नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव,** अधिवक्ता, आयकर एवं व्यापार कर, मो०: 9415365280

खुद पर नियंत्रण जरूरी है

दोषी बाजार है. बाजार सेक्स को बढ़ावा देकर, बेरोजगार नौजवानों के मन-मस्तिष्क में सेक्स-सेक्स-सेक्स भर दिया है. बाजार की वजह से आज चहुं ओर सेक्स का बोलबाला है. बाजार की माया से परिधान भी अछूते नहीं हैं. वस्त्र ऐसे तैयार किये जा रहे हैं कि सेक्स उभरकर अपनी महत्ता दिखाता रहे. क्या शालीन कपड़े व्यक्तित्व को निखारते नहीं? बाजार यहाँ भी भारी पड़ गया है. बाजार पश्चिम से ही तो आया है. वह सिखाता है कि तुम व्यक्ति नहीं, निरा वस्तु हो. जरूरत पड़े तो स्वयं को भी बेचकर, अपनी इच्छा भोगेक्षा पूरी करो. महज धन पशु बनकर जीओ। हाय रे छलना बाजार! .. .अब ..तो जान छोड़ो! बाजार ने लोगों को दिग्भ्रमित कर रखा है..यह हर तरह की विकृति का जनक है. मानसिक विकृति भी उनमें से एक है. खुद पर नियंत्रण जरूरी है. संयम ही सभी समस्याओं का रामबाण है. हमें फिर से अपनी महान भारतीय संस्कृति की ओर मुँह करना होगा. बाजार के क्रूर सिकंजे से निकलना होगा. अपने नौनिहालों को सदाचार का कठोर पाठ पढ़ाना होगा. बाजार के चाकचिक्य में स्वयं को तथा दूसरों को घिरने से बचना-बचाना होगा. **डॉ० दुर्गाशरण मिश्र,** प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, मो०:9792046333

ऐसे लोग नामर्द कहलाने ही योग्य है।

बलात्कार जानबूझकर, सोची समझी रणनीति के तहत किया जाने वाला ऐसा अपराधिक कुकृत्य है, जो अक्षम्य तो है ही, अधिक से अधिक, कड़ी से कड़ी सजा बलात्कारी को देने पर भी न्याय संगत नहीं कहा जा सकता है. फिर चाहे वह बलात्कार किसी नाबालिग द्वारा ही क्यों न किया गया हो? बलात्कार करना नाबालिग कहलाने योग्य नहीं है. देखा जाय तो इस कुकृत्य को अंजाम देने वाले ऐसे असामाजिक एवं अवांछित

लोग होते है जो विकृत मानसिकता एवं सेक्सुअली कमजोर या यूं कहा जाये कि अपने को नामर्द समझने वाले लोगों की ही देन होती है. क्योंकि कहा गया है कि अधजल गगरी छलकत जाए. घड़ा यदि पूरा भरा होता है तो जल्दी छलकेगा नहीं. इसी तरह सम्पूर्ण मर्द इनती घिनौनी एवं ओझी हरकत करने की सोच भी नहीं सकता है. निश्चित ही ऐसे लोग नामर्द कहलाने ही योग्य है।

महेन्द्र कुमार अग्रवाल, महासचिव-मीडिया फोरम ऑफ इंडिया, इलाहाबाद मो०: 9935959412

यह पूर्णरूपेण मानसिक विकृति है.

बलात्कार की घटनाओं के लिए अगर दोषी कोई है तो व्यक्ति विशेष की मानसिक विकृति है. इसका जिम्मेवार पहनावा कत्तई नहीं हो सकता. पाश्चात्य संस्कृति अपनाना इसके लिए आंशिक रूप से जिम्मेदार हो सकता है. बलात्कार की घटनायें पूर्णरुपेण मानसिक विकृति ही कारक है. बलात्कार की घटनाओं पूर्णतः रोकना सम्भव नही है. पर कठोर दण्ड प्रक्रिया और प्रारम्भ से ही नैतिक शिक्षा देकर इस पर नियंत्रण पाया जा सकता है.

राजकिशोर भारती, सामाजिक चिन्तक, 9450610970

द्रोपदी का चीरहरण क्या मीडिया या पाश्चात्य संस्कृति से प्रेरित था

इस प्रकार कि घटनाओं के लिये हमारी (माँ, बेटी, बहन, पत्नी) सामाजिक उपेक्षा. यह उपेक्षा सिर्फ पुरुष द्वारा नहीं बल्कि महिलाओं द्वारा भी की जाती है. स्त्री कि उपेक्षा हमारे समाज मे उसके गर्भ में आने के साथ ही शुरू हो जाती है. हम हिन्दुस्तानी जन्म भूमि को माता का दर्जा देते हैं, देवियों के स्वरुप को भी मानते हैं परन्तु स्त्री को स्वतंत्र निर्णय लेता हुआ नहीं देख सकते. हमारे समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग है जो ना सिर्फ महिला को अपने समक्ष दबा कर रखना मांगता है बल्कि वह स्त्री को उसकें शरीर से इतर कुछ समझता ही नहीं. जो हमारे समाज के आतंरिक खोखलेपन को उजागर करता है. मेरा तो यही मानना है एक स्त्री को मात्र उपभोग कि वस्तु समझने वाला असामाजिक, वहशी, दरिंदा जो इंसानी भेष में छुपा है, सफेदपोश है जिस पर किसी कि निगाह नहीं जाती ऐसा तबका किसी भी वक्त किसी भी आयु वर्ग कि महिला के साथ जिस हद तक का अपराध करने मे नहीं चूकता. बलात्कार का दोष आधुनिकता या महिलाओं के वस्त्रों को देना, पाश्चात्य संस्कृति को कारण बताना सभी पूरी तरह निराधार और असलियत को ना स्वीकारने की हठ है, या मीडिया, फिल्मों को दोष देकर अपना पल्ला झाड़ने कि वही पुरानी प्रवृति. हमारे समाज में ही एक मासूम दो साल कि बिटिया के साथ वहशियाना कुकृत्य होता है, उसने ऐसा क्या भाव भंगिमा कर दी जो यह हुआ, एक बासठ साल कि वृद्ध महिला के साथ यह कुकृत्य हमारे समाज में ही ...तो क्या उनका कपड़ा पहनने का तरीका, भाव भंगिमाएं गलत थी, किसी भी युग में दानव ऐसे कुकृत्य करते रहे हैं द्रोपदी का चीरहरण करने का प्रयास क्या मिडिया या फिल्म, पाश्चात्य संस्कृति से प्रेरित था. नहीं, कदापि नहीं. यह एक महिला को नीचा दिखाने के लिये उसे कुचलने का प्रयास था. असल मायनो में महिलाओं के प्रति पुरुष वर्ग कि नफरत, उनका खुद पर विश्वास कि कमी होना, उनकी मानसिक नपुंसकता, सोच विचार कि अपंगता ही ऐसे कुकृत्यों को जन्म देती है. बलात्कार, स्त्री उत्पीड़न को रोकने का बस एकमात्र तरीका है वहशी, दरिंदों को दहशत से भर दो और यह इस तरह के कुकृत्यों कि सजा सख्त करके ही हो सकता है. हम सभी को घर से ही बचपन से ही अपने बेटों को स्त्री का सम्मान करना सिखाना होगा और बेटियों को शक्तिशाली बनाना होगा और ऐसी घटनाओं का ही नहीं बल्कि ऐसी घटना को अंजाम देने वाले भेड़ियों को निष्क्रिय करना होगा क्योंकि ऐसी घटना को अंजाम देने वाले हमारे और आपके बीच ही निवास करते है. बेटियों को सम्मान दीजिये, प्यार और विश्वास दीजिये, उन्हे स्वतंत्रता दीजिये, सुरक्षा दीजिये, उनकी उपेक्षा मत कीजिये. अगर एक लड़का स्वतंत्र निर्णय ले सकता है तो एक लड़की भी, पढ़ने, कैरियर, मित्रता, प्रेम सभी कि आजादी उसका भी अधिकार है. वो भी इंसान है, और उसे आत्मनिर्भर बना कर सशक्त बना कर हम समाज मे स्वस्थ वातावरण बनाने का प्रयास कर सकते हैं. यह मुद्दा बहुत व्यापक और संवेदनशील है.**डॉ. सोसन एलिजाबेथ,** समाज सेवी, संचालिका अंध विद्यालय मो० 9453039467

हम सब (समाज) दोषी है

'बलात्कार की घटनाओं के लिए हम सब (समाज) दोषी है. लड़कियों का पहनावा काफी हद जिम्मेवार है. हां, आवश्यकता

है पाश्चात्य संस्कृति को समझने की न कि ग्रहण करने की. यह मानसिक विकृति नहीं है. इसको रोकने के लिए कड़ी सजा देनी चाहिए व अच्छे संस्कार देने चाहिए बच्चों को.

श्रीमती सपना गोस्वामी, प्रधानाचार्या, इलाहाबाद मो०: 9415697976

अच्छे संस्कार व अच्छी शिक्षा देनी चाहिए

बलात्कार की घटनाओं के लिए माता-पिता दोषी व लड़कियों के पहनावा भी एक कारण है. बलात्कार की घटनाएं पाश्चात्य संस्कृति अपनाने से नहीं हैं. यह मानसिक विकृति नहीं है. बलात्कार की घटनाओं को रोकने के लिए बच्चों को अच्छे संस्कार व अच्छी शिक्षा देनी चाहिए.

श्रीमती प्रभा द्विवेदी, शिक्षिका, इलाहाबाद

कठोर से कठोर सजा का दी जानी चाहिए

बलात्कार की घटनाओं के लिए कमजोर व लम्बी कानूनी प्रक्रिया जिम्मेवार है. न ही इसके लड़कियों का पहनावा और न ही पाश्चात्य संस्कृति को अपनाना इसके कारण है. इसको रोकने के लिए फास्ट कोर्ट ट्रैक व कठोर से कठोर सजा का प्रावधान किया जाना चाहिए. **मोहित गोस्वामी,** समाज सेवी, इलाहाबाद मो०: 7499293868

बलात्कारियों का सामाजिक बहिष्कार किया जाना चाहिए

बलात्कार की घटनाओं के लिए हम सब दोषी है. लड़कियों का पहनावा और पाश्चात्य संस्कृति को अपनाना इसके लिए जिम्मेवार हैं. स्पष्ट रुप से मानसिक है अथवा नहीं कहा जा सकता. इसको रोकने के लिए कड़ी से कड़ी सजा दी जानी चाहिए, बलात्कारियों का सामाजिक बहिष्कार किया जाना चाहिए और हमें स्वयं सतर्क रहना चाहिए.
श्रीमती जया शुक्ला, शिक्षिका एवं सामाजिक कार्यकर्ता

अपने मन के विचार में परिवर्तित करें

लड़कियों का पहनावा एवं लोगों की मन की गलत धारणाएं दोषी है. लड़कियों पहनावा जिम्मेवार है. हमें यह अधिकार नहीं है कि हम किसी संस्कृति को किसी अपराध के साथ जोड़े, पर मेरा मानना है कि कि आप किसी भी संस्कृति को अपनाए पर अपनी संस्कृति न भूलें. किसी संस्कृति को अपनाते हैं तो उनकी संस्कृति यह नहीं कहती कि आप अपनी मूल संस्कृति छोड़ दें. यह मानसिक विकृति नहीं है. जिस लड़की के साथ बलात्कार हुआ वह अपने व्याय फ्रेंड के साथ फिल्म देखने गई थी. किसी गर्ल फ्रेंड के साथ क्यों नहीं गई. उस समय उसका पहनावा क्या था? बलात्कार की घटनाओं को रोकने के लिए सबसे पहले अपने मन के विचार में परिवर्तित करें. साथ ही लड़कियों से निवेदन करना चाहता हूं कि थोड़ा सा अपने पहनावे पर ध्यान दें और बड़े लोगों की बात सूने समझे एवं पालन करें. वे कुछ कहते है उसमें हमारी ही भलाई होती है.
अभिषेक कुमार, कम्प्यूटर आपरेटर, मो० 9450403386

सभी वर्ग के पुरुष व महिलाओं के विचार जानने के बाद यही निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश पुरुष व महिलाए यह मानते हैं कि इस प्रकार की घटनाओं के लिए हम स्वयं दोषी है, लड़कियों का पहनावा, पाश्चात्य संस्कृति भी कुछ प्रतिशत जिम्मेवार है. मानसिक विकृति इस कारण बहुत कम लोग मानते हैं. इसके लिए कठोर कानून बनाना, महिलाओं को सम्मान देकर इसे रोका जा सकता है. लेकिन व्यक्तिगत रुप से यह मानना है कि

बलात्कार की घटनाओं के लिए हम स्वयं जिम्मेवार हैं. सरकार, पुलिस, पहनावा, पाश्चात्य संस्कृति को अपनाना इसके लिए आंशिक जिम्मेवार है. जहां तक मानसिक विकृति का सवाल है तो यह मेरे ख्याल से केवल ऐसी घटनाएं इसकी कारक हो सकती है जो किसी पारिवारिक सदस्य, रिश्तेदार, शिक्षक द्वारा अपने से काफी कम उम्र की लड़की या उम्रदराज महिला के साथ बलात्कार. इसको पूर्णतया तो रोका नहीं जा सकता है हां कुछ उपाय करके कुछ कम किया जा सकता है. जैसे लड़कियों को इलाहाबाद की आरती जैसे लड़ने के लिए प्रेरित कर, उन्हें तात्कालिक बचाव के उपायों का स्कूल व कॉलेजों में प्रशिक्षण देकर, लड़के/लड़कियों दोनों को मोबाइल व इंटरनेट के उपयोग पर निगरानी रखकर, लड़कियों के पहनावे को शालीन कर, स्कूलों में नैतिक शिक्षा देकर, माता-पिता के द्वारा स्त्री वर्ग के प्रति सम्मान की भावना रखने को प्रेरित कर.

संपादक

व्यंग्य

हिन्दी और मच्छर

✍ **शुभ्रांशु पाण्डेय**
शिक्षाः एल.एल.बी, **व्यवसायः** अधिवक्ता उच्च न्यायालय
संपर्कः एम-2/ए-17, ए.डी.ए.कॉलोनी, नैनी, इलाहाबाद मो० 9919057501

बदलते मौसम की शाम का आनन्द लेने हम सभी पार्क में बैठे थे. हम सभी का मतलब लालाभाई, मैं और एक नये सदस्य भास्करन. तभी भास्करन का मोबाइल किंकियाया. अब उस तरह की आवाज को और क्या शब्द दिया जा सकता है. मोबाइल पर तमिल में काफ़ी देरतक बात चलती रही. यों पल्ले तो कुछ भी नहीं पड़ रहा था लेकिन हम सभी उनके चेहरे के मात्र हावभाव से ही सही, उनकी बातों को पकड़ने की कोशिश करते रहे. कुछ देर के बाद जब उनकी बात खत्म हो गयी तो मैंने अपनी झल्लाहट को स्वर देते हुए ठोंक दिया 'यार तमिल सुनने में क्या लगता है, मानों कोई कनस्तर में कंकड़ डाल के जोर-जोर से हिला रहा हो.'

सभी एक साथ ठंढ़ा पड़े. मगर यह साफ़ लगा कि भास्करन को यह तनिक नहीं सुहाया था. लेकिन वे ठहरे विशुद्ध स्मार्ट सज्जन. मेरी तरफ उन्होंने एक तिरछी मुस्कान फ़ेक दी. मगर समझ में नहीं आया कि ये भाव उनकी खिसियाहट के थे या वो आने वाले युद्ध क चेतावनी दे रहे थे. कुछ देर तक वो अपने विदेशी बेटे की उपलब्धियों को बखानते रहे कि अचानक एक से अपनी बातों को हैण्डिल भाषा और इसके अंदाज की ओर मोड़ दिया, 'हिन्दी भी तो गरेड़ियों की भाषा है..'

उनके इस कथन पर हम सभी एक साथ चौंक पड़े. ये तो एकदम से तथ्यहीन आरोप हैं. अलबत्ता अंग्रेजी के बारे में ये बातें जरूर कही जाती हैं कि शुरु में ब्रिटेन में राजशाही तथा कुलीन वर्ग की भाषा भी अंग्रेजी नहीं थी, फ्रेंच थी. अंग्रेजी तब निम्न वर्ग या गरेड़ियों और मजदूरों की भाषा हुआ करती थी. लेकिन हिन्दी पर ऐसा कोई आरोप हम सभी की समझ से एकदम परे था. अपने कथ्य को विस्तार देते हुए भास्करन ने अपनी मुस्कान की कुटिलता को कुछ और धारदार किया, 'आप जानवरों या गाय-भैंसों को कैसे भगाते हैं? हः.हाः.हुर्रर..ऐसे ही न? अपनी बातचीत को सुनिये तो लगभग हर पंक्ति का अंत क्या होता है? है, हैं, हों...अब ये बताइये कि हिन्दी न जानने वाले लोगों को क्या लगेगा, मानों जानवर भगा रहे हैं! तो क्या ये नहीं हो गयी गरेड़ियों-चरवाहों की भाषा?'

सच कहूं तो हिन्दी भाषाभाषी होने के बावजूद मैं हिन्दी भाषा की इस दशा से बिलकुल अनजान था. हिन्दी के प्रति इस कोण से सोचने का अवसर हीं नहीं मिला था. अपने कहे का इस तरह बुमरैंग होकर वापस आना मुझे बिलकुल नागवार गुजरा था. बात अब नाक की हो गयी थी. हिन्दी की नहीं भाई, अपनी नाक की! लगा इन भास्करन महोदय से भला कैसे हार जाऊँ? फिर भी अपने आप को थोड़ा संयत किया और हिन्दी के सबसे भरोसेमन्द रूप को पकड़ा.

'देखो भाई, हिन्दी में जो लिखा जाता है वही पढ़ा भी जाता है. यहां दूसरी भाषाओं की तरह नहीं है कि शब्दों के उच्चारण में पढ़ने वाले को अपने शब्द-भण्डार और अपनी समझ पर निर्भर रहना पड़ता हो. आप लोगों के यहां तो अक्षर ऐसे है कि तमिल में 'कथा पे खाना खाने आना है' लिखा है तो उसे 'गधा बेगाना गाने आना है' पढ़ा जा सकता है. हिन्दी के कवर्ग, चवर्ग या पवर्ग या किसी वर्ग आदि का मतलब ही नहीं है. तमिल भाई लोग अपने नाम के इनिशियल तक अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षर से करते हैं, क्योंकि तमिल में वैसे अक्षरों के उच्चारण हीं नहीं होते....'

इस बहसबाजी में मैं कुछ ज्यादा ही पर्सनल होता जा रहा था. लालाभाई ने माहौल को समझा जो अभी तक एक श्रोता की तरह आनन्द ले रहे थे. इस बोझिल हो रहे माहौल को हल्का करने के लिए हंसते हुए कहा, 'भाई, अंग्रेजी में वर्ण ज्यादा होकर ही क्या हुआ, जब उन्हें लिखने के बाद भी नहीं पढ़ा जाता. कम से कम हिन्दी में तो लोप या साइलेंट का बखेड़ा नहीं है. अंग्रेजी के इस लोपकरण ने परीक्षाओं में कई-कई विद्यार्थियों के नम्बर ही लोप करा दिये हैं. बोलने के मामले में तो अंग्रेजी और भी अज़ीब है. एक ही अक्षर के अलग-अलग उच्चारण होते हैं. अब देखिये, डोर और पुअर का भयंकर अंतर! डू और गो का चुटकुला तो अब नये बच्चों के लिए भी पुराना हो चुका है.' अब लालाभाई के इस कहे पर सभी लगे हें हें हें करने.

तभी तिवारी जी अपनी सांसों और दूहरे हुए बदन को संभालते हुए आते दिखायी दिये. वे शाम की एक्सरसाइज का कोटा पूरा करके आ रहे थे. पसीना पोंछते हुए सीधे धम्म से आकर बीच में बैठ गये और सामने के जूस-कार्नर से सभी के लिए अनारशेक लाने का आर्डर दे दिया. भाई, वो तिवारी जी ठहरे. हम सभी ने कुछ शिष्टाचारवश और ज्यादा शेक के लिए मुख पर चौड़ी मुस्कान चिपका ली. शेक पीने के बाद माहौल थोड़ा ठंढ़ा हुआ दिखा. लेकिन भास्करन तो जैसी अपनी सारी खुन्नस आज ही निकालने के मूड में तने बैठे थे. यहां तक कि अनार शेक का ठंढ़ा ग्लास भी उन्हें सुकून नहीं दे सका था. बात को आगे बढ़ाने लगे. लग गया कि अगले बमगोले के साथ तैयार हैं. उन्होंने कहा, 'हिन्दी में जो लिखा जाता है, वो ही पढ़ा जाता है. लेकिन वैसा ही किया भी जाता है क्या?'

तिवारी जी तुरत ही प्रवचन के मूड में आ गये. आजकल जब से एक से एक घोटालों का पर्दाफ़ाश होने लगा है, वो टीवी पर से नये-नये लोप हुए एक बाबाजी का समागम ज्यादा करते फिर रहे हैं. तुरत ही उन्होंने भास्करन की बातों का जैसे समर्थन किया. 'एकदम ठीक हा आपने अन्ना भाई, कोई अपने खुद का कहा नहीं करता. अब तो बेईमानी, मिथ्यावाचन, भ्रष्टाचरण जैसे अपने समाज का स्वभाव होता जा रहा है. नैतिकता का तो पूरी तरह जैसे नाश ही हो चुका है.' तिवारी जी ने मानों कोई रटा-रटाया जुमला टेप की तरह बजा दिया गया था.

भास्करन ने तिवारीजी को टोकते हुए कहा, 'मैंने इतनी हाई-फाई बात नहीं की है भाई....मेरे कहने का बस इतना-सा मतलब है कि क्या हिन्दी के लिखे वाक्यों की क्रिया को आप सही में पूरा करते हैं?'

सभी ने एक दूसरे की आंखों में देखा और हमने अपने-अपने सिर स्वीकारोक्ति में एक साथ हिला दिये. भास्करन ने छूटते ही कहा.'...तो फिर बैठे हुए चलके दिखाइये...'

इस पर तो सभी फिर से एक दूसरे का चेहरा देखने लगे. लेकिन इस बार सभी के भाव अलग-अलग थे. लालाभाई ने सीधा मतलब ही पूछ लिया. 'अमा, ये क्या जुगाली कर रहे हो भाई?'

भास्करन ने खुलासा किया, 'आप लोग हिन्दी में किसी से कहते हैं न.. .'बैठ जाओ', 'सो जाओ', और तो और 'आ जाओ'....अब ये बताइये कि अगर कोइ बैठ गया तो मतलब ये हुआ कि उसकी क्रिया की गति समाप्त हो गयी है. फिर भी अगर से चलना कहा जाय तो वो क्या चलेगा. बल्कि इस तरह की किसी क्रिया को फुदकना ही कहेंगे...अब देखिये, आप किसी बच्चे से कहते हैं 'आजा'. अब बताइये कि वो आपके किस आदेश का पालन करे? वो आयेगा या जायेगा? अगर उस बेचारे ने ऐसा कुछ करना चाहा भी तो एक ही जगह पर आगे-पीछे डोलता रहेगा. आ...जा...आ...जा.. या, 'सो जा' कहने पर एक सामान्य व्यक्ति के लिए ऐसा करना संभव ही नहीं है. अगर कोई ऐसा कुछ करता भी है तो वो ये एक बीमारी है. इस विषय पर फिल्में भी बन चुकी हैं.'

हम सभी के सभी उनकी बातों पर निरूत्तर हुए जा रहे थे. इधर भास्करन तो जैसे हमारी बेदम हुई बल्लेबाजी को देख कर आज यार्कर पर यार्कर मारे जा रहे थे. इसी में आगे उन्होंने अगला जुमला दे मारा, 'भाई हिन्दी में तो निर्जीव वस्तुओं का भी लिंग-निर्धारण कर दिया जाता है. ...एक कटोरी तो दूसरा कटोरा! या वो भी नियत नहीं... एक कटोरी कब किसी के लिये कटोरा हो जाये कुछ नहीं कहा जा सकता, एक बच्चे के लिये जो कटोरा होगा वो ही किसी भद्र जन के लिए कटोरी होगी....'

लालाभाई ने तो इस पर बेजोड़ मजा लिया, '..बलियाटी लोग तो हाथी का भी पुल्लिंग किये बैठे हैं...हाथा... हा हा हा'

भास्करन की बात भले बेढ़ब सी लग रही थी, लेकिन हम सभी के सभी निरूत्तर हो चुके थे. आंखों ही आंखों में हार मान चुके थे. हमारी सोच और हमारे विचार मंथन के साथ शाम भी लगातार गहरी होती जा रही थी. मैंने अपने सिर के ऊपर एक-दो बार हाथ झटक कर कहा, 'चलिये भाई घर चलते हैं बहुत मच्छर काट रहे हैं...'

लेकिन सच्चाई तो यही थी कि भास्करन के कटाक्ष मच्छरों से भी ज्यादा जोर से डंक मार रहे थे. सही भी है, हर भाषा की अपनी विशेष सुन्दरता और अलग गरिमा होती है. जिसकी अपनी परिपाटी हुआ करती है. कोई हो, इस मामले में अपनी नाक ज्यादा ऊँची क्या रखनी.

एस.एम.एस रचना

यादों को हमने खोने न दिया, गमों ने हमें चुप होने नहीं दिया, आंखे जो आज भी भर आई उनकी याद में, पर उनकी हंसती हुई सुरत ने हमे रोने ना दिया।

मो0 08957124490

बुद्धिसेन शर्मा

शिकारी निकले हैं कंधों पे जाल डाले हुए;
परिंदो उडते चलो भूख को संभाले हुए।
सुनें तो कैसे सुनें दिलजलों की वो आवाज;
जो घर में सोये हैं कानों में तेल डाले हुए।
तरह-तरह के जो मन्तर सिखा रहे हैं तुम्हें;
ये लोग हैं मेरे स्कूल से निकाले हुए।
पसंद ही नहीं करते किसी को अपने सिवा;
तो क्या ज़माने में एक आप ही निराले हुए।
मैं इनके वास्ते चन्दन का पेड़ हूँ गोया;
ये नाग सब हैं मेरी बेबसी के पाले हुए।
बड़े-बड़े जो धुरंधर हुए हैं धरती पर;
पालक झपकते सभी काल के निवाले हुए।
ज़रा से नाले में फिसले, फिसल के डूब गये;
जिन्हें गुरूर था दरिया को हैं खंगाले हुए।
झुलस के रह गयीं सारी मुरव्वतें अपनीं;
हमारे मुल्क में ऐसे भी कुछ उजाले हुए।
जो हर कदम पे नया ज़ख़्म दे रहे हैं मुझे;
ये आइने हैं मेरे हाथ के उछाले हुए।
मेरे ग़मों के फरिश्तो मुझे सहारा दो;
कि खुश्क आंखों में अब आँसुओं के लाले हुए।

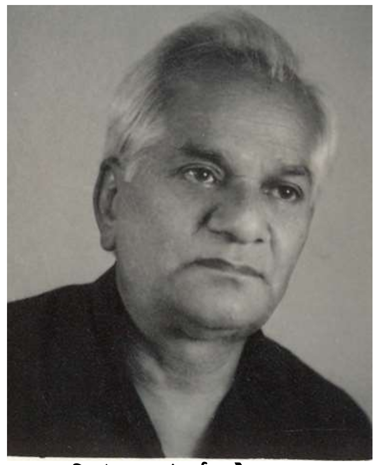

जन्मः २६.१२.१६४१
सम्मानः 'साहित्य श्री', भारती परिषद, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, मकतब-ए-ग़ौरो फिक्र प्रयाग द्वारा सम्मानित, साहित्य सम्मेलन द्वारा सारस्वत सम्मान, दुबई की साहित्यिक संस्था 'हमारी एसोसिएशन' से २५००० रुपये की नकद राशि से सम्मानित, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, द्वारा अभिनंदन. **संपर्कः** मो० : ०६४५११७८७३२

अपने पास बुला लो मुझको

सन्त कुमार टण्डन 'रसिक'

जन्मः ०६.०४.१६३६, **इलाहाबाद**
सम्प्रतिः अध्यक्ष-राष्ट्रीय राजभाषा पीठ, इलाहाबाद
वर्तमान सम्पर्कः १२५/३१, ओ ब्लाक, गोविन्द नगर, कानुपर-६
दूरभाषः ०५३२-३२५४५८७

चली गई तुम प्रिय सुहागिनी
इस जीवन की मधुर रागिनी
नहीं सुनाई अब देती है।
मेरी चिन्ता कौन करेगा
सुविधाओं को कौन धरेगा
जीवन शेष कटेगा कैसे?
एक बार तुम फिर आ जाओ
दुखती हुई रग सहलाओ
अमृत सा चुबन पा जाओ
धीरज धरना कठिन हो रहा
प्राणातुर मन, हृदय रो रहा
प्राणातुर मन, हृदय रो रहा
कौन संभालेगा अब मुझको
बिना तुम्हारे जी न सकूंगा
एकाकी मैं रह न सकूंगा
अपने पास बुला लो मुझको
(पत्नी स्व०श्रीमती मिलनी टंडन के प्रति)

बुढ़ापा

कितना शानदार है बुढ़ापा
तली, भुनी चीजों से है परहेज
कड़ी चीजों से सजती नहीं मेज
कोमल, मुलायम, तरल व्यंजन
वह भी बस थोड़ा सा
जैसे आंखों में अंजन
न ज्यादा गरम या ठंडा
मिजाज हो गया जैसे संगम क पेड़ा
न सोने का कोई समय/न जागने का
बस दिन हो या रात उसे झांकने का
बस आ जाए कोई हम उम्र उसे पास बैठाऊँ
सीने से लगा कर कुछ सुनू कुछ बताऊँ
`ये पोते और नाती
जीवन की ज्योति अंधे की लाठी
कट रही है जिन्दगी
करते सबसे दुआ बन्दगी
जितना शानदार है बुढ़ापा
बस कभी खोते नहीं आपा।

'सागर' होशियारपुरी

लगता है हंसी उसका ही अंदाज अदा का,
ज़ेवर न उतारा हो कभी जिसने हया का।
जो देख ले इक बार तेरा हुस्न बला का,
दिल से न भुला दे वो कहीं नाम खुदा का।
जब यार की ज़ुल्फ़ों की बिखर जाती है खुशबू,
बढ़ जाता है कुछ और मज़ा बादे-सबा का।
वो राह में हैं आएंगे दो-चार घड़ी में,
गुज़रा है यही कह के अभी झोंका हवा का।
कह दो कि न देखें वो शरारत की नज़र से
मानें न बुरा वर्ना मेरी कोई ख़ता का।
बेकार है देना क़सम अल्लाह की इनको
इस दौर के इन्सां को नहीं ख़ौफ़ खुदा का।
बन्दों की मदद का मैं तलबगार नहीं हूँ,
'दुनिया में भरोसा है मुझे सिर्फ़ खुदा का।'
उल्फ़त के मरीज़ों का इलाज और है 'सागर'
कुछ होगा असर उनपे दवा का न दुआ का।

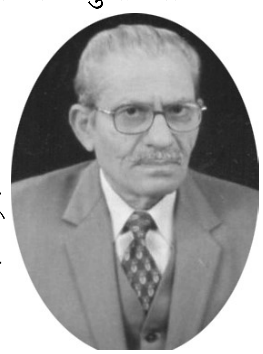

'सागर' होशियारपुरी

नामः प्रेम सागर बहल
जन्मः २५.०६.१६३७
शिक्षाः एमकाम. **कार्यक्षेत्रः** सेवा. वरिष्ठ लेखाधिकारी **कृतिः** 'खुशबू का चिराग़' (नज़्में और ग़ज़ले)
मुख्य सम्मानः हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा सारस्वत सम्मान, समन्वय संस्था द्वारा चेतना श्री, अ.भा. अम्बिका प्रसाद दिव्य स्मृति द्वारा रजत अलंकरण, डॉ. राकेश गुप्त स्मृति काव्य पुरस्कार के अन्तर्गत प्रथम पुरस्कार
सम्पर्कः ५६३/४५२, पुराना ममफोर्डगंज, (मस्जिद के निकट), इलाहाबाद-२११००२, उ.प्र. मो० ६४५०६६११७३

सलाह ग़ाज़ीपुरी

अपनी कहानी उनको सुनाने चले है हम
रुठे हुए को आज मनाने चले हैं हम
वह जाने अन्जुमन है औ जाने गुलसितां
रस्ते में उसके फुल बिछाने चले हैं हम
अज़्मों यक़ीन दिल में लिये हौंसले के साथ
वन्जर ज़मी पर फुल उगाने चले है हम
ऐ हुस्न वालों तुम भी ज़रा जागते रहो
अहले वफ़ा की नीद चुराने चले हैं हम
मां बाप की दुआओ को लेकर वसद ख़लुस
विगड़ा हुआ नसीव बनाने चले है हम
फेंका है उस्ने संग जो अपने मकान से
उसको समझ कर फुल उठाने चले है हम
जो रोशनी भी दूसरों को दे सकें सलाह
ऐसा चेराग़ घर में जलाने चले हैं हम।

सै०सलाहुद्दीन तख़ल्लुस 'सलाह गाज़ीपुरी'

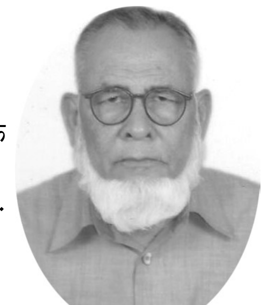

सम्प्रतिः सेवा. वरिष्ठ लेखा परीक्षक
जन्मः ०३.०४.१६४२
सम्पर्कः ए/१०६०/२, जी.टी.वी. नगर, करैली, इलाहाबाद
मो० ६७६३६६६५५३

तलब जौनपुरी

दिलों में बर्फ़ जमती है, फ़ज़ा में आग लगती है,
सदायें सहम जाती हैं हवा जब रुख़ बदलती है।
अमन का दौर आया है अहम चर्चा है महलों में।
फ़ज़ा में मुफ़लिसी रो-रो के अपना सर पटकती है।
कोई उलझा शिकारी है खुद अपनी जाल में देखो।
इधर इक गांठ खुलती तो उधर दूजी उलझती है।
चमन को लूटता माली शिकायत आम है लेकिन,
निज़ामत गूंगी बहरी है कहां फ़रियाद सुनती है।
यह कैसी आग नफ़रत की लगा कर चल दिया ज़ालिम,
कभी बुझ कर नहीं देती अभी रह रह सुलगती है।
कभी करवट तो बदलेगा ही यह बेहिस ज़माना भी,
फ़ज़ा में सुगबुगाहट है हवा भी यह समझती है।
'तलब' को शायरी है या किसी हिसी की आंखें है,
कि इक चौंका हुआ जंगल है
वहशत जिसमें पलती है।

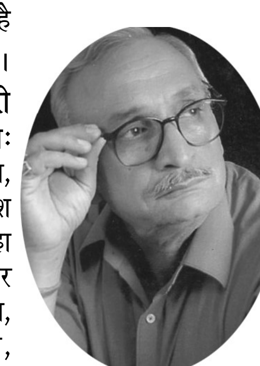

श्रीराम मिश्र 'तलब जौनपुरी
जन्मः ३१.०७.१६४८ **शिक्षाः** यांत्रिक अभियांन्त्रिकी में डिप्लोमा, **संप्रतिः** सिचाई विभाग से अवकाश प्राप्त, **लेखनः** गीत, ग़ज़ल, दोहा एवं नयी कविता **प्रकाशनः** 'भंवरदार ज़िन्दगी, प्रयाग के जीवन्त कवि, मधुपर्क, घटाओं के फूल,

पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित, दूरदर्शन व आकाशवाणी से प्रसारण.**सम्मानः** 'बेदम वारसी-निसार सीमावी अलंकरण', 'काव्य प्रवीण' मानद उपाधि सहित सहित लगभग २५ संस्थाओं से प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान **सम्पर्कः** ४५७/२५५ए, बाघम्बरी हाउसिंग स्कीम, अल्लापुर, इलाहाबाद, मो० ६४५०६१७६०६

मन का दर्पण मिला नहीं

तन तो देखा नित्य मुकुर में,
मन का दर्पण मिला नहीं।
देखा पीछे बिम्ब प्रकृति का,
लिये खड़ा उपहार सभी,
आये स्वयं कक्ष में मेरे,
अचला के श्रृंगार सभी,
सजाया तन पुष्पों से,
मन का उपवन मिला नहीं।
दिखा इसी दर्पण में मुझको,
भूतल का विस्तार यहां,
मैं आगे हूं पीछे मेरे,
एक बड़ा संसार यहां,
तन तो चला योजनों इसमें,
मन का वाहन मिला नहीं।
देखा पीछे इसी मुकुर में,
जल का पारावार भरा,
और इसी के अन्तर में नव,
रत्नों का भंडार भरा,
बहुत इन्हें पहना लघु तन ने,
मन का पाहन मिला नहीं।
दिखा तथा प्रतिबिम्ब व्योग का,
जिसमें नीरद नीर भरे,
आते पावस बन पृथ्वी पर,
मन्थर मन्द समीर भरे,
धोयी बहुत मलिनता तन की,
मन का श्रवण मिला नहीं।
प्रतिक्षण बजा सितार मधुरतम,
गाये मैंने गीत यहां,
और आज भी इन गीतों से,
उठता जाग अतीत यहाँ,
बहुत बजाई वीणा अपनी,
मन का वादन मिला नहीं।
बहुत मिला सम्मान धरा पर,
तथा बहुत विश्राम मिला,
निश्चय मिली विजय यदि कोई,
लड़ने को संग्राम मिला,
मिला बैठने को सिंहासन,
मन का आसन मिला नहीं।
जहां चाहता है मन जाना,
वहां सुलभ सोपान नहीं,
मन के इंगित भव्य भुवन तक,
तन ले सके उड़ान नहीं,
जहां उभय का हो सम्मेलन,
ऐसा साधन मिला नहीं।

विजय लक्ष्मी 'विभा'

जन्मः 25.08.1946, **शिक्षाः** एम.ए. (अंग्रेजी, हिन्दी, पुरातत्व), बी.एड.**प्रकाशित पुस्तकें:** 'विजय गीतिका'-गीत संग्रह, 'बूंद-बूंद मन', अँखिया पानी पानी-कविता संग्रह **उपलब्धियां तथा सम्मानः** 'साहित्य श्री', 'साहित्य सुरभि', क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय एवं हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा स्मृति चिन्ह सहित विभिन्न संस्थाओं से सम्मानित **सम्पादनः** 'नवीन पीढ़ी की कवयित्रियाँ, गीत सौरभ-कविता संग्रह, २. 'विश्व स्नेह समाज' एवं 'दिव्य लोक' का संपादन **विशेषः** 'नेपाली हिन्दी रचनाकार सम्मेलन' कांठमाडू में आधुनिक हिन्दी गद्य कविता में महिलाओं का योगदान पर आलेख वाचन २). उ.म.क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र इलाहाबाद के तत्वावधान में गंगटोक-सिक्किम में आयोजित सर्वभाषा कवि सम्मेलन में काव्य पाठ.

सम्पर्कः १४६जी/२, चकिया, इलाहाबाद-२११०१६, मो०ः ६४५११८१४२३

मादरे-वतन की याद

आती जब मादरे-वतन की याद,
गिर जाती है सरहद की दीवार,
रहकर भी सात समंदर-पार,
बहुत सताती वतन की याद,
दिल धड़कने लगता है यार।
अपने गुजरे लमहों की स्मृतियाँ,
दादा-दादी की प्यार भरी बतियाँ,
मौज-मस्ती, दोस्तों की गलबहियाँ,
जब याद आती गलियाँ और गाँव,
दिल धड़कने लगता है यार।
चाहे जो हो अपनी मजबूरी,
याद सताती दोस्तों की दूरी,
महकने लगती वतन की सोंधी माटी,
जब मादरे-वतन की याद आती,
दिल धड़कने लगता है साथी।
जन्नत से बढ़कर मादरे-वतन,
वतन पर निछावर माटी का तन,
याद रखना सदा वन्दे-मातरम्,
वतन ही है हमारा तात-मात,
याद आते ही दिल धड़कता है यार।

कैलाश नाथ पाण्डेय

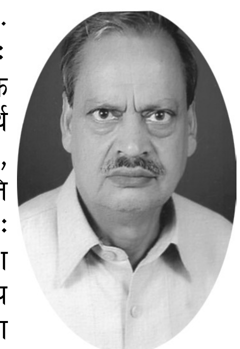

जन्मः ३०.१२.१६४७ **शिक्षाः** स्नातक **प्रकाशनः** यथार्थ की पंखुडिया, मनीषा, प्रतिध्वनि **प्रशस्ति पत्रः** हिन्दी भाषा सम्मान, साहित्य श्री, राष्ट्र भाषा गौरव, साहित्य शिरोमणि काव्य मित्र **विशेषः** पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन तथा आकाशवाणी व दूरदर्शन से कविता पाठ **सम्पर्कः** ७६२, नेह कुंज, बाघम्बरी मार्ग, भारद्वाजपुरम, इलाहाबाद-२११००६, मो०ः ८००४८००६४४

जफ़र सईद

झाँक करके मेरे अन्दर देखता कोई नहीं
जानते हैं सब मुझे पहचानता कोई नहीं।
सच हेमायत के लिये फरयाद लेकर है खड़ा
सब ज़बाँ वाले है लेकिन बोलता कोई नहीं।
क्या ताज़्जुब वो किसी अन्धे कुएँ में जा गिरे
पास जिसके अपनी मन्जिल का पता कोई नहीं
मुफलिसी और मेरी बरबादी मुझे लाई कहां
सब यहां अपने हैं अपना मानता कोई नहीं।
होके साहिल पर खड़े अफसोस तो करते हैं लोग
डूबने वाले को बढ़कर थामता कोई नहीं।
सर से साया उठ गया माँ बाप का जब से 'ज़फ़र'
अब हमारी गलतियों पर डान्टता कोई नहीं।

ज़फर सईद जीलानी
जन्मः 1949
संपर्कः 115/140, मिन्हाजपुर, इलाहाबाद

मैं नेहिल अनुपात हो गई

साँझ ढले जिस दिन तुम आये
भीगी पलकें रात हो गयी।
हम तुम अपलक रहे देखते
दृग-जल की बरसात हो गयी।
काचे मन की कैद मीन तब मुक्त झील में छूट गयी थी।
घिरी बन्ध की सरिता उस दिन अनायास ही फूट गयी थी।।
खनक उठा था उस दिन मेरे, बन्द हाथ का प्यासा कंगन।
महक रहा था मन के आँगन व पुष गंध का मादक चन्दन।।
अंग-अंग संस्फुरण हुआ कुछ
नयनों से सब बात हो गयी।
नील गगन की रजत प्रभामय रजनी में जितनी निखरी थी।
हिम खण्डों-सा बहते जल में बूँद-बूँद होकर बिखरी थी।
तत्क्षण की प्रतिकूल दशायें अनजाने अनुकूल हुई थी,
पीड़ा में सुख मिला विलक्षण मैं अपना सब भूल गयी थी।।
तुम पाषाण खण्ड से अविचल
मै तो कम्पित गात हो गयी।
सम्मित शशि शीतल सित कर से, हम दोनों को थपकाया था।
आपस का प्रत्यर्पण रह-रह, उर्मिल मन को अपनाया था।
परिरम्भन में रहे बंध हम, फरियादों में याद खो गयी,
रहे सुसुप्त जागरण में भी हमसे पहले रात सो गयी।
सिमट रही थी मुखर त्रियामा
मै नेहिल अनुपात हो गयी।

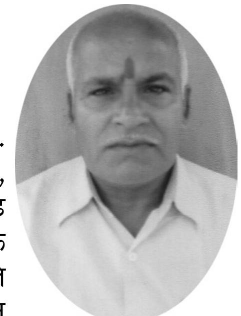

डॉ० शम्भुनाथ त्रिपाठी 'अंशुल'
जन्मः 06.03.1956 **सम्प्रतिः** सहा. प्रोफेसर **कृतियाः** अनन्दीचरित, नैवेद्य, काऽ करबऽ-हास्य व्यंग्य, सोनवा-खण्ड काव्य सहित कई ग्रन्थों के लेखक **सम्बद्धताः**महामंत्री-रामायण मेला समिति व विश्व संस्कृत संस्थानम्, अध्यक्ष -वाणिज्य परिषद, क्षेत्रीय विकास संघबारा **सम्मानः** साहित्यामृत सम्मान, राष्ट्र कवि पं. वंशीधर शुक्ल सम्मान, साहित्य सम्राट सहित शताधिक सम्मानों से विभिन्न संस्थाओं से सम्मानित.
सम्पर्कः ऋचायतन, ३५०बी, नया बैरहना, इलाहाबाद-२११००३, मो०: ६६१६४०६७२६

आशिफ गाज़ीपुरी

ग़म से न जमाने के तूफान से डरता हूँ
इस दौरे तरक्की के इंसान से डरता हूँ।
मुझको भी शराबी तू वैद्य न समझ बैठे।
मै तेरी निगाहों की पहचान से डरता हूँ
क्यों कोई करे मुझपे एहसान जमाने मे
खुद्दार तबियतो हूं एहसान से डरता हूँ।
ग़म हो कि मुस्सरत हो या कोई भी
ईमान सलामत हो, ईमान से डरता हूँ।
वो मेरी ग़ज़ल सुनकर क्यों होश गवां बैठे
हर वज्म़ में आशिफ अब नादान से डरता हूँ।

सम्पर्कः 55सी/ईएम, गौस नगर, करैली, इलाहाबाद, मो०-9389066779

तुम बहुत ही याद आये

दर्द के बादल उमड़ कर, आँख में ऐसे समाये।
मौन व्याकुल इस हृदय में, तुम बहुत ही याद आये।।

प्यार का मकरन्द घोले,
जो विहँसता था यहाँ।
रुप वह भोला सलोना,
आज खोया है कहाँ।।
दीप स्मृति के जलाकर, द्वार पर मैंने सजाये।
मौन व्याकुल इस हृदय में, तुम बहुत ही याद आये।।
अमराइयों की छाँव में कल,
जो सुनहरे पल बिताये।
प्रश्न अनसुलझे बहुत थे,
पर तुम्हीं ने हल सुझाये।।
शब्द तुमसे ही चुराकर, गान भ्रमरों ने सुनाये।
मौन व्याकुल इस हृदय में, तुम बहुत ही याद आये।।
लहर गिनना या अकेले,
बैठ यादों के झरोखे।
जिन्दगी ने प्यार में
अनगिनत खाये है धोखे।।
पर तुम्हारा पत्र ही है, जो सदा ढ़ाढ़स दिलाये।
मौन व्याकुल इस हृदय में, तुम बहुत ही याद आये।।

डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय
जन्मः 15.07.1957 **सम्प्रतिः** राष्ट्रीय अध्यक्ष-भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ, संपादक- साहित्यांजलि प्रभा, कई पत्र-पत्रिकाओं व संग्रहों का सम्पादन, पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित
सम्पर्कः गंधियांव, करछना, इलाहाबाद, मो० ९९३५२०५३४१

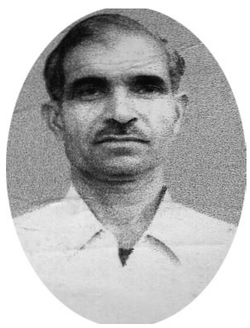

रमेश नाचीज़

दर्द-ओ-ग़म में भी मुस्काना, माने रखता है।
अपने आपको खुद समझाना, माने रखता है।
मैं दावे से कह सकता हूं मेरा अनुभव है,
चट्टानों पर फूल खिलाना, माने रखता है।
सब कुद संभव हो सकता है ये माना लेकिन,
चींटी का पर्वत चढ़ जाना माने रखता है।
जंग किए बिन सच्चाई के रस्ते पे चलकर,
प्रतिद्वन्दी को धूल चटाना, माने रखता है।
चलती चाकी देख कबीरा रोया आख़िर क्यों,
इस मुश्किल का समझ में आना, माने रखता है।
उसका जीना देखके हमको कहना पड़ता है,
सच लोहे का चना-चबाना, माने रखता है।
कहने को मैं कह सकता हूं ख़ुद को दानिशवर,
पर ख़ुद को नाचीज़ बताना, माने रखता है।

जन्मः 15.07.1961
शिक्षाः इण्टरमीडिएट **सम्प्रतिः** रक्षा प्रतिष्ठान में कार्यरत, **कृतियाः** 'अमृत वाणी'-गीत संग्रह, 'दिन भी जैसे रात है' ग़ज़ल संग्रह
सम्पर्कः 524, कर्नल गंज, इलाहाबाद–211002

महाकुम्भ-आस्था का प्रतीक

श्रद्धा औ विश्वास का उमड़ा है सैलाब
कुम्भ-कलश से आ रही भीनी-भीनी आब।।
आस्था की दरिया बही, श्रद्धा के कर जोर।
चलो कुम्भ स्नान को सारे बन्धन तोर।।
हर-हर गंगे का जहां होता है जयघोष।
त्रिवेणी, वेणी कटे, मिलता है संतोष।।
भेष अलग, भाषा अलग, अलग-अलग तहजीब।
कड़ी एक सब धर्म की, आस्था बड़ी अजीब।।
नगर खास प्रयाग है, आस्था का है वास।
तिरबेनी के रेत पर, उतरा है आकाश।।
चन्दन सी खुशबू लिये, सोहे मस्तक रेत।
तिलक लगा, योगी-यती सब का मन हर लेत।।
धर्म ध्वजा लहरा रही तिरबेनी के घाट।
तम्बू से सज गये हैं गंग-यमुन के पाट।।
धर्म और अध्यात्म की चर्चा चारो ओर।
सन्त समागम से हुआ तन-मन भाव विभोर।।
अमिय सलिल रसपान कर महाकुम्भ में आय।
लख चौरासी योनि का पाप सभी मिट जाय।।
बड़े भाग्य से मिला है, महाकुम्भ का योग।
'देव' मिले या ना मिले, यह दुर्लभ संयोग।।

देवनाथ सिंह 'देव'
जन्मः 02.01.1956
शिक्षाः बी.एससी, एम.ए., आयुर्वेद रत्न **सम्प्रतिः** अध्यापक, **कृतियाः** 'अमृत वाणी'-गीत संग्रह, 'दिन भी जैसे रात है' ग़ज़ल संग्रह **सम्पर्कः** 263ए/3बी, आदर्श नगर, भावापुर, करैली, इलाहाबाद –211016 मो0 9956476581

सूरज निकला चाँद भी निकला

सूरज निकला चाँद भी निकला
टिमटिम करते तारे आगे
गांधी का सुराज आना था
बस सुराज के नारे आये।
आधी रात मिली आज़ादी
झण्डा लेकर ऊंघ रही है
सुबह का सूरज कब निकलेगा
लाल किले से सूँघ रही है।
सपने देख रही है अब तक
कैसे सबके द्वारे जाये।
अलगू जुम्मन सोच रहे हैं
रात बड़ी है कट जायेगी
बटवारें ने जो खोदा था
वह भी खाई पट जायेगी।
घर घर आग लगाने वाले
शकुनि बीच हमारे आये।
क्रमशः गंगा का पानी भी
गंदा होता चला गया
देख देखकर राष्ट्रपुरुष भी
अंधा होता चला गया।
उजला उजला आसमान था
बादल कारे कारे आये।
यह बरगद का वृक्ष पुराना
नयी जड़े भी फूट रही हैं
किन्तु तने पर दीमक चींटे
पत्ती-पत्ती टूट रही है।
हाथ में लेकर तेज कुल्हाड़ी
छुप छुपके हत्यारे आये।
भ्रष्टाचार के कई मुखौटे
असली चेहरा छुपा हुआ है
बड़े बड़े निष्ठुर बांधो में
नदी का पानी रुका हुआ है।
राष्ट्रबधु का वाहक बनकर
डोरी के रखवारे आये।
धीरे धीरे राष्ट्र हमारा
विश्व पटल पर छा जायेगा
आशा है कुछ वर्षो में ही
महाशक्ति भी बन जायेगा।
देख देखकर विश्वनिपाकर
अपने अपने चारे लाये।

रविनन्दन सिंह

जन्मः 25.01.1967 **शिक्षाः** स्नातकोत्तर अंग्रेजी साहित्य **अभिरुचिः** साहित्य, संगीत, कला **विधाएः** कविता, कहानी, समीक्षा **प्रकाशनः** जब मैं रिक्त होता हूं, मिथक भी बोलते है, क्षर से अक्षर तक-काव्य संग्रह, भारतीय धार्मिक चेतना के आयाम, भारतीय सामाजिक चेतना के आयाम-चिन्तन, आग लगी है बस्ती में-गीत संग्रह, क्षितिज से क्षितिज तक-कहानी संग्रह
संप्रतिः समीक्षा अधिकारी, लोक सेवा आयोग
सम्पर्कः १०८, बी.एच.एस., अल्लापुर, इलाहाबाद मो० ६४५४२५७७०६

रोशनी

अंधेरे में गोते न खाइये।
प्रकाश की ओर मुढ़ भी आइए।।
हार जायेगी रोशनी।
गर दीपक न जलाओगें।।
हम सदभाव का गीत भूल गए हैं।
हर जगह द्वेष छा रहा है।।
जलाओ सदभाव का दीपक।
अपनत्व का आलोक जल जायेगा।
रोशनी बन गीत गुनगुनाना चाहिये।
बैर छोड़ गैरों को अपनाना चाहिए।।
तभी हार जायेगा अंधेरा,
जीत रोशनी की हो जायेगी।

डॉ०बालकृष्ण पाण्डेय

जन्मः 31.12.1968, **शिक्षाः** बी.ए., पी.एच.डी, एम.ए.-हिन्दी, विज्ञापन एवं जनसम्पर्क डिप्लोमा, एल.एल.बी **अभिरुचिः** राजनीति, लेखन, पत्रकारिता, सामाजिक कार्य **प्रकाशनः** काव्य कुसुमावली, **सम्बद्धताः** अध्यक्ष-राष्ट्रीय रामायण मेला आयोजन समिति सहित करीब 15 संस्थाओं से जुड़ाव **सम्मानः** काव्य श्री, पुष्पाक्षत, आचार्य सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा लगभग छः दशक सम्मान व उपाधियां,

संप्रतिः एडवोकेट, हाईकोर्ट **सम्पर्कः** 293/143, 'शिवराम छाया' तेलियरगंज, निकट विष्णु आटेमोबाइल, इलाहाबाद-211004 मो०9415616378

एक पत्ता

डाल का वो पत्ता अब
पीला पड़ने लगा है, शायद
जीवन की आशाओं का
अन्त होने जा रहा है
क्योंकि पतझड़ आरहा है,
अब तक वो हवाओ से इतरा कर
न जाने क्या क्या कह रहा था
अपने नये स्वप्नों के झूले में,
बिठा कर पेंग बढ़ा रहा था,
प्रिय की प्रतीक्षा में कभी मान
कभी अभिमान कर रहा था तो
कभी अपने आनन्द को हृदय
में अनुभव कर रहा था।
सिर्फ इतना ही क्यो घटाओं के
स्वागत में झूमता रहा बादलो को देख
मचलता रहा और उसने
अपने अन्धकार तम/को भी अपलक
दृष्टि/से चुपचापस देखा किन्तु
पल क्षणिक बीतते ही आभास होते है
इस हरे पत्ते की मौन प्रतिक्रियायें
प्रारम्भ होता है हरे मे पीलापन का
प्रवेश, धीरे धीरे जो उस पत्ते को
इतना दुर्बल कर देता है कि
वो उस डाल पर बहुत ही
सम्भल कर टिका रह पाता है,
हल्की गति से वो निष्तेज होने
लगता है और फिर एक दिन ऐसा

आता है जब वो मन्द
गति से बहने वाले समीर को भी
सह नहीं पाता है.....हमेशा
हमेशा के लिये वो अपने
उस डाल से टूट कर गिर जाता है।

देवयानी

शिक्षाः बी.ए., बी.टी.सी, **साहित्यिक यात्राः** एक खिड़की कहानियों की, क़दम जिन्दगी के, जज़्बात मनतरंग, मन-सौरभ, मनमाली
प्रसारणः आकाशवाणी व दूरदर्शन से कविताओं का **सम्मानः** सरस्वती समभ्यर्चना, साहित्य श्री, 'भाषा गई तो संस्कृति गई' हिन्दी प्रचारिणी सभा मारिशस, भारत भाषा भूषण उपाधि सहित अनेको सम्मान
सम्पर्क:72 / 59,ए नया बैरहना, इलाहाबाद

सौरभ पाण्डेय

दर्द दे, जख़्म दे, सता कर दे।
इस नदी को मग़र समन्दर दे।।
सोच को शब्द और तेवर दे।
फिर ज़ुबां को समय व अवसर दे।।
वो खामोश हो चुका अब
खुद न मांगेगा, ये समझ कर दे।।
वक्त के पाँव उम्र चलती है
ज़िंदगी काश स्व महावर दें।
देखकर जिंदगी यहाँ नंगी।
बेहया से लगे टंगे परदे।।
इस दिए पर जरा भरोसा कर।
कौन जाने यही नयन तर दे।।
आँख भर देख लूँ तुझे 'सौरभ'
इन चिरागों में रोशनी भर दे।

सम्पर्कः
एम-२/ए-१७,
एडीए कॉलोनी,
नैनी, इलाहाबाद
मो.:
9919889911

मलाला

मलाला! तेरा ज़ज़्बा बहुत आला है
लिखी खून से आजादी तू वाला है-
आज का उन्वान हो तुम/इल्म का निशान हो तुम/हिम्मत का हो दबिस्तां दुख्तरे मन्नान हो तुम/तेरे तज़किरे में आज हर रिसाला है।/मलाला! तेरा ज़ज़्बा बहुत आला है/तालीम से हैवान परेशान क्यू/तू जो है नूरे इल्म बिखेर रही/बऐवज़ तुग़लकी फ़रमान क्यूं
तेरे फ़ना की कोशिश बहुत रिज़ाला है
मलाला! तेरा ज़ज़्बा बहुत आला है
हर लुक़मान तेरा रतबुललिसान है
तुम बनोगी वज़ीर ये इमकान है
जहां चांद पे है आज इंसा पहुंचा
ख़्वातीन के तालीम पे अफ़गान है
वक़्त ही बता इसका क्या इज़ाला है
मलाला! तेरा ज़ज़्बा बहुत आला है
सितमज़दा पे इंसान पशेमान है
ख़ौफ इतना बन्द हर ज़बान है
क्या हैवान ताज़ पहनेगा यहां
शहूर सहरा हुआ जीना ज़ियान है
अक्सर मजरुह हुई कोई ग़ज़ाला है
मलाला! तेरा ज़ज़्बा बहुत आला है
लोग कहते है ये जमीं ज़िनान है
क्यों सहमती ये बोस्तान है
अम्न के एवज़ ये तशद्दुद क्यों
सोच के सिसकी लेता आसमान है।
सहर में गुल पे कितना अश्कों ज़ाला है
मलाला! तेरा ज़ज़्बा बहुत आला है

विपिन श्रीवास्तव 'दिलकश'
जन्मः02.12.68, **शौक़ः** हिन्दी उर्दू में गीत, नज़्म, **संप्रतिः** अधिवक्ता **सम्पर्कः** डी-१/६८, कालीन्दीपुरम, इलाहाबाद मो०: ९८३८०८९७२६

बिसाती

तीज-त्योहार में/हमारे गांव में
बिसाती जरुर आता है
आज ही के दिन उसे/अपने महत्व का पता चलता है/आज ही के दिन उसे अपने अस्तित्व की/सार्थकता महसूस होती है/गांव में आता है बिसाती चूड़िया लेकर/लेकिन गांव की औरते
सिर्फ चूड़ियों से संतुष्ट नहीं होती
वे फरमाईश करती हैं/झुमके, बिन्दी, नेलपालिश/और लिपिस्टिक की भी
बिशाती शरमाता है/और मेंहदी रचे हाथों में/चूड़ियां पहनाता है/गांव की औरते उससे हंसी ढ़िढोली/करती है/घूंघट की ओट से मुस्काती है
उससे खुल कर मजाक/करती है मानों वह/उनका कोई सगा-रिश्तेदार हो
बिसाती सब समझता है/उसे आज फुर्शत कम मिलती है/कोई इधर बुलाता है कोई उधर/बिसाती सोचता है इतना प्यार तो/उसे कभी नहीं मिला?
बिसाती की दुनिया भली मालुम पड़ती है आज एक नशे मे है बिसाती/किन्तु गांव की कच्ची-पगडंडिया/लांघ कर जब वह/शहर की पक्की सड़क पर आता है/तो उसे तुरंत काटा चुभता है बिसाती सोचता है/फूलों की घाटी में यह कांटा कैसे?

विवेक सत्यांशु

जन्मः 20.01.1970 **शिक्षाः**एम.ए–हिन्दी, राजनीति **सम्प्रतिः** स्वतंत्र लेखन, **साहित्यिक विवरणः** पत्र पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन, हिन्दी साहित्य सम्मेलन का 'सारस्वत-सम्मान',

आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से रचनाओं का प्रसारण, **कृतियाः** मैं जीवित रहूंगा-कविता संग्रह, वैचारिक निबन्ध **संपर्कः** 14 / 12, शिवनगर कॉलोनी, अल्लापुर, इलाहाबाद-211006,मो० 9889155306

नारी तू क्या है?

नवजीवन है, या यौवन है,
या मधुवन है, कि क्या है तू?
मधुमास है तू, या अबुझ प्यास,
या झूठी आस, कि क्या है तू.
तू सतरुपा, या तू मरियम,
या हौवा है, कि क्या है तू?
तू मृगनयनी, या तू जननी,
या भागिनी है, कि क्या है तू?
तू वसुधा है, या अम्बर है,
या सागर है, कि क्या है तू?
उड़ता बादल, या तू सम्बल,
या आँचल है, कि क्या है तू?

विमल वर्मा

जन्मः 15.08. 1975 **सम्प्रतिः** रक्षा लेखा विभाग **शिक्षाः** स्नातक, **विधाएंः** कविता, दोहे व ग़ज़ले **सम्पर्कः** 134, यमुना बिहार, द्रौपदी घाट, पीसीडीए (पेंशन), इलाहाबाद मो०: 9450450263

आवश्यक सूचना

पत्रिका के 12वर्ष पूरे करने पर सदस्यों के लिए विशेष योजना 15. 06.2013 तक वार्षिक सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्यों को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित श्री बालाराम परमार 'हंसमुख' पुणे महाराष्ट्र की कृति 'नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता की प्रति मुफ्त प्रेषित की जाएगी. इस योजना का लाभ उठाने की शीघ्र अपना सदस्यता फार्म भर कर भेजें

पत्रिका के प्रकाशन के १२वर्ष पूरे होने पर विशेष प्रस्ताव

सदस्यता ग्रहण करें और सदस्यता शुल्क के बराबर मूल्य की पुस्तकें मुफ्त प्राप्त करें

सदस्यता प्रपत्र

महोदय,

मैं विश्व स्नेह समाज का, एक साल, 5 साल, आजीवन एवं संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये .... नकद / धनादेश / चेक / बैंक ड्राफ्ट / पे इन स्लिप द्वारा भेज रहा / रही हूं कृपया मुझे 'विश्व स्नेह समाज' के अंक नियमित रूप से भिजवाते रहें.

1. बैंक ड्राफ्ट क्रमांक....................................दिनांक...........
बैंक का नाम..
2. धनादेश क्रमांक......................................दिनांक...........

हस्ताक्षर

नाम :..
पता :..
....
....पिन कोड..........
दूरभाष / मो0..........................ईमेलः..............................

विशेष नियमः

01 नवीकरण हेतु शुल्क भेजते समय कृपया सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें, जो पत्रिका भेजते समय आवरण लिफाफे पर आपके नाम के ऊपर लिखा होता है.
02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें. उत्तर प्रदेश के बाहर के चेक भेजते समय बैंक शुल्क जोड़कर भेजें.
03 सदस्यता शुल्क यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः538702010009259 आईएफएससीस कोड (आरटीजीएस): UBIN0553875 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.
04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय प्रकाशित किया जाता है व संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.
05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाता है.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रति :	रु0 10 / –	$ 1.00 /
वार्षिक	रु0 110 / –	$ 5.00 /
पाँच वर्ष :	रु0 500 / –	$ 150 /
आजीवन सदस्यः	रु0 1100 / –	$ 350 /
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000 / –	$ 1500 /

विश्व स्नेह समाज(एक रचनात्मक क्रान्ति)

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011, उ.प्र. ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

अपने

जब किसी संस्था में/किसी नए व्यक्ति का
आगमन होता है/उसको सब सुन्दर लगते हैं
सब अपने लगते हैं/सबको वह अपना लगता है
समय की चक्की में पिसते-पिसते
सब सपने लगने लगते हैं। /जिनको वह अपना समझ रहा था
वह सब पराये होते जा रहे हैं
सृष्टि के पंचभूतों की संरचना की तरह ही
संस्था के शरीर की रचना भी
समस्त तत्त्वों के सम्मिश्रण से होती है।
कुछ व्यक्ति ऊर्ध्वगामी, कुछ अधोगामी
और कुछ मध्यगामी होते हैं।
ऊर्ध्वगामी सबसे अधिक प्रतिभावान, संस्कारवान
बुद्धिमान, प्रभावशाली वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है
अधोगामी किसी भी कार्य में अक्षम
किसी भी तरह नौकरी प्राप्त कर लेने में सक्षम होता है
मध्यगामी अपनी प्रतिभा और मेहनत के बल पर
अधिकार प्राप्त करने की चेष्टा में रत रहता है।
नये आये व्यक्ति के सामने समस्या यह आती है
वह किस वर्ग के साथ में जाए
उस समाज में कहाँ स्थान बनाये
धीरे-धीरे उसकी क्षमता एवं विचारो के अनुसार
उसका स्थान निर्मित होने लगता है
वह ऊर्ध्वगामी, अधोगामी या मध्यगामी
बनने लगता है। /उसको पता भी नहीं चलता है
किन्तु, कुछ समय के बाद
किसी पंक्ति में अपने को खड़ा पाता है
जिस पंक्ति के करीब जा खड़ा होता है
वे सब अपने बन जाते हैं/बाकी कुछ दूर
कुछ बहुत दूर नजर आते है।

डॉ० रतन कुमारी वर्मा

शिक्षाः एम.ए. -राजनीति विज्ञान,हिदी, पी.एच.डी. **प्रकाशित पुस्तकें:** हिन्दी आलोचना के तीन आयाम, महिला साहित्यकारों का नारी चित्रण **संपादनः** प्रतिनिधि हिन्दी कहानियां, भारतीय संदर्भ में दलित विमर्श, मध्यकालीन कॉलेज, 'सृजन' वार्षिक पत्रिका **सम्प्रतिः** अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद

कविता

ट्रेन में घुसते ही टी.टी. ने चारों तरफ नज़र दौड़ाई।
कोने में बैठे युवक के पास पहुंचा और बोला 'टिकट प्लीज'।
उसे देख युवक घबराया और बोला-जी मैं अज़ीज़।।
अबे तेरा नाम नहीं टिकट पूछा है। /टिकट न हो तो अंदर करने का सोचा है।। /युवक के बिखरे हुए बाल, पिचके हुए गाल। /और फटे हुए कपड़े बता रहे थे उसका हाल।।
जेल जाने की बात सुनकर युवक घबरा गया।
और उसे अपनी ही गरीबी पर तरस आ गया।।
परेशान भाई, बीमार मां, बूढ़ा बाप याद आ गया
यह सब सोच कर उसकी सूनी आंखों में पानी आ गया
तभी टी.टी ने उसे कॉलर पकड़ कर हिलाया। /और कुछ पैसे देने को धमकाया।। /युवक की असमर्थता पर वह बूरी तरह चिल्लाया। /अचानक युवक को भी गुस्सा आया।
वह बोला चिल्लाइए मत, शांत हो जाइए।
जेल ले जाना है तो शौक से ले जाइए।।
यदि जानना चाहते हैं मेरी मजबूरी तो जानिये।
पर कम से कम रिश्वत तो मत मांगिये।
आप क्या समझते हैं मैं अनपढ़, ज़ाहिल, गंवार हूं।
जी नहीं मैं शिक्षित बेरोजगार हूं।।
एम.ए. फर्स्ट क्लास हूं/और एल.एल.बी भी पास हूं।
नौकरी का इण्टरव्यू देने जा रहा हूं। /पर टिकट न ले सका गरीबी का मारा हूं। /वकालत का रजिस्ट्रेशन है पर आज तक काला कोट नहीं सिला पाया। /आप टिकट की बात करते हैं मैंने तो कल से खाना भी नहीं खाया।।

कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव

लेखन विधाः कविता, कहानी, नाटक **गतिविधियां:** देश की विभिन्न संस्थाओं द्वारा विभिन्न संस्थाओं से सम्मानित, आकाशवाणी से रचनाओं का प्रसारण, नाटककार, कई संस्थाओं के पदाधिकारी व सदस्य, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष-भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ
संपर्कः ५/६, शिवकुटी, तेलियरगंज, इलाहाबाद, **मो०:** ९९३६९८३४६७२

भिखमंगे का ईश्वर

मंदिर के सामने
भिखमंगों की कतारें
एक साथ ही उनके कटोरे
ऐसे आगे बढ़ जाते हैं
मानों सब यंत्रवत हों
दस-दस पैसे की बाट जोहते वे
मंदिर के सामने होकर भी
मंदिर में नहीं जाते
क्योंकि वे सिर्फ
एक ही ईश्वर को जानते हैं
जो उनके कटोरे में
पैसे गिरा देता है।

मौत

आज मैंने मौत को देखा!
अर्द्धविक्षिप्त अवस्था में हवस की शिकार
वो सड़क के किनारे पड़ी थी!
ठण्डक में ठिठुरते भिखारी के
फ़टे कपड़ो से वह झांक रही थी!
किसी के प्रेम की परिणति बनी
मासूम के साथ नदी में बह रही थी!
नई-नवेली दुल्हन को दहेज की खातिर
जलाने को तैयार थी!
साम्प्रदायिक दंगों की आग में
वह उन्मादियों का बयान थी!
चंद धातु के सिक्कों की खातिर
बिकाऊ ईमान थी!
आज मैंने मौत को देखा!

कृष्ण कुमार यादव

जन्मः 01.07.1950, **शिक्षाः** एम.ए. **लेखन विधाः** कविता, कहानी,लेख, लघु कथा, **प्रकाशनः**पत्र-पत्रिकाओं, संकलनों व लगभग १२ वेब पत्रिकाओं में, **प्रसारणः** आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारण **कृतियाः** अभिलाषा, अभिव्यक्तियों के बहाने, इण्डिया पोस्ट, अनुभूतियां और विमर्श-निबंधक संग्रह, क्रान्ति यज्ञः १८५७-१६४७ की गाथा **सम्मानः** विभिन्न संस्थाओं द्वारा सोहनलाल द्विवेदी, कविवर मैथिलीशरण गुप्त सम्मान सहित लगभग ३५ सम्मान

सम्पर्कः निदेशक डाक सेवाए, इलाहाबाद परिक्षेत्र, इलाहाबाद-२११००१
e-mail: kkyadav.y@rediffmail.com

बसंत

मौसम गदराया सकल, पंकज खिले अपार।
महकी बसुधा अतिप्रबल, बहती मंद बयार।।
मन मोहे सेमल सुमन, टेसू कमल गुलाब।
छत्तों में बहने लगा, मधुरस का शैलाब।।
बौर अंकुरित हो रहे, अनुपम है सौगात।
नूतन कलियां खिल रहीं, हुई सुहानी रात।।
बेर पकी इठला रही, महुआ है मदहोश।
रंग जमाता आँवला, अरहर खोई होश।।
पीले पट की चुनरी, सरसो आढ़े खेत।
पेट मटर का भर गया चना को आया चेत।।
भरी दूध से बालियाँ, खेतों में मुस्काय।
धरा गगन आशीष दें, ऋतु बसंत फिर आय।।

ईश्वर शरण शुक्ल

जन्मः08.05.1972, **शिक्षाः** परास्नातक **प्रकाशनः** पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से काव्य पाठ, **उपलब्धियांः** विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, द्वारा आयोजित काव्य प्रतियोगिता में प्रथम, नेहरु युवा केन्द्र इलाहाबाद द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान, युवा प्रतिभा सम्मान, पं. सुमित्रानंदन पंत्र स्मृति पुरस्कार, गणेश महोत्सव एवं आभा ग्रामीण विकास सेवा संस्थान प्रयाग द्वारा सम्मानित, पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी स्मृति पुरस्कार, सहयोगी काव्य संग्रह 'सुप्रभात' और ' कैसे कहूं में प्रकाशन, 'हे गंगा' कविता के लिए पर्यावरण पुरस्कार,

पताः द्वारा श्री रमा शंकर तिवारी, १६८, मानस नगर, नैनी, इलाहाबाद मो० ६६३५१७४८६६

बापू आ जाओ तत्काल

जय जगत जननी के लाल बापू, आ जाओ तत्काल
प्राची से वसुधा हो पुलकित अखिल विश्व में छाई
नई चेतना तुम भर के अद्‌भुत ज्योंति जलाई
सत्य अहिंसा के पथ चलकर प्रेम मिलन की राह बताई
इसीलिये जनमानस तेरा नित गाता गुणगान
नश्वर प्राण जगत से उठकर सुरभित भस्म बनाई
ले श्रद्धा शांति दया मसाल बापू आ जाओ तत्काल
बढ़ते चरण महान थे तेरे देख लिया संसार

प्रगति पंथ पर चलकर तुमने जगत किया उजियार
अथक परिश्रम के बलबूते हरा कष्ट का भार
इसी उन चरणों की हमें जरुरत पुनः पड़ी है
गहन गर्त व शोले खाई जो करते है पार
ले क्षमा कर्म वैरागी थाल बापू आ जाओ तत्काल
तुम मानव मात्र नहीं बापू वे जांत पांत के संस्था थे
देश विदेश सम्पूर्ण विश्व में चलते अभय निहत्था थे
नर-नारी व बूढ़े बच्चे जिसमें रखते आस्था थे
छोड़ो भारत छोड़ो भारत रहा तुम्हारा नारा
भूल मानकर हंसते रहते लिये साथ जन जत्था थे
टूटा चश्मा टूटा चप्पल फटा खादी का शाल
जय जगत जननी के लाल बापू आ जाओ तत्काल

राजेश कुमार सिंह

जन्मः 01.07.1964 **शिक्षाः** एम.ए. हिन्दी, **प्रकाशनः** अपराध ा, मधुशाला की मधुबाला, जैव प्रौद्योगिकी एवं लाख की खेती , पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन, **सम्मानः** संस्थाओं द्वारा १२ से अधि क सम्मान **सम्पर्कः**285-डी, किदवई नगर, अल्लापुर, इलाहाबाद-६

मो० फ़रहान ख़ान

अभी है और सफर-ए-शब का सामना करना
अभी से गुल न कहीं शम-ए-हौसला करना
अगर्चे तेज़ है तूफ़ान ख़ौफ़ क्या करना
हमें है इसका बहरहाल सामना करना
अभी तो सुबह की लाली भी यारो आई नहीं
चराग-ए-खुं से अभी तय है रास्ता करना
इसी में राज़ निहां है बका-ए-हस्ती का
हज़ार यूरिरा-ए-ग़म हो मुक़ाबला करना
हो लाख़ ज़ख़्म मगर मुस्कुराना पड़ता है
कोई मज़ाक़ नहीं दिल का आईना करना
हज़ार मौज-व-तलातुम हो ज़िन्दगी में मगर
हमें तो आता है दरिया में रास्ता करना
तमाम उम्र तो गुज़री समझ सके न कभी
हमें है खुद का अभी और मुतालेआ करना
हज़ार आतिश-ए-नमरुद हो मगर फ़रहान
हमे तो तादम-ए-आख़िर है सामना करना।

जन्मः 26.04.1978 **पिताः** मु० रिज़वान ख़ान **शिक्षाः** बी.ए., बीएससी, ए लेवल, अदीब कामिल
सम्पर्कः एमआईजी-12, गौस नगर, करेली, इलाहाबाद मो० 7860702076

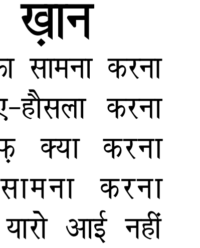

मो० चाँद बाबू 'चाँद जाफरपुरी'

इश्क खुशबू हैं हवाओं में बिखर जायेगा
मोमामला हुस्न का होगा तो किधर जायेगा
हम समझते थे कि ये ज़ख़्म है भर जायेगा
हमको मालूम न था दिल में उतर जायेगा
मेरा दिल बादिया पैमां हुआ यादों में तेरी
अब तो अल्लाह मुहाफिज है जिधर जायेगा
एक लम्हें को सही सामने आ जा वरना
तेरा दिवाना ग़मे हिज्र में मर जायेगा।
जब तू आयेगा मेरे घर तो रेफ़ाकत की कसम
मौसमें गुल मेरी आंखों में ठहर जायेगा
अब तो गुज़रेगी मेरी उम्र तेरी यादों में
वक़्त आना है जो आयेगा गुज़र जायेगा
जो मिली तुझको ज़ेया 'चाँद' सुखन गोई की
अज्र इसका तेरे उस्ताद के सर जायेगा।

ग्राम व पोस्ट-जाफरपुर, महावां, कौशाम्बी, उ.प्र. मो.919299798

वीनस केसरी

अब हो रहे हैं देश में बदलाव व्यापक देखिये,
शीशे के घर में लग रहे लोहे के फाटक देखिये।
जो ढो चुके हैं इल्म की गठरी अदब की बोरियां,
वो आ रहे हैं मंच पर बन कर विदूशक देखिये।
जिसके सहारे जीत लीं हारी हुई सब बाज़ियां,
उस सत्य के बदले हुए प्रारूप भ्रामक देखिये।
जब आपने रोका नहीं खुद को पतन की राह पर,
तो इस गिरावट के नतीजे भी भयानक देखिये।
किसने कहा था क्या विमोचन के समय सब याद है,
पर खा रही हैं वह किताबें कब से दीमक देखिये।
इक उम्र जो गंदी सियासत से लड़ा लड़ता रहा,
वह पा के गद्दी खुद बना है क्रूर शासक देखिये।
जनता के सेवक थे जो कल तक आज राजा हो गए,
अब उनकी ताकत देखिये उनके समर्थक देखिये।

जन्मः 1.03.1985 **शिक्षाः** स्नातक, **संप्रतिः** पुस्तक व्यवसाय **प्रकाशनः**अनेक पत्र-पत्रिकाओं तथा अंतरजाल में गजल, गीत व दोहे प्रकाशित, **प्रसारणः** आकाशवाणी इलाहाबाद **विशेषः** उप संपादक, त्रैमासिक गुफ़्तगू **पत्राचारः**जनता पुस्तक भण्डार, ६४२, आर्य कन्या चौराहा, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-211003 मो. (0)9453004398

इम्तियाज़ अहमद ग़ाज़ी

रस्में उल्फ़त अदा कीजिए।
आप मुझसे मिला कीजिए।
आपसे प्यार करता हूं,
इसलिए सच कहा कीजिए।
जिसका दुश्मन नहीं है कोई,
उससे बचके रहा कीजिए।
प्यार करते हैं गर आप भी,
एसएमएस कर दिया कीजिए।
गर सलीक़ा नहीं इश्क़ का,
बस ग़ज़ल पढ़ लिया कीजिए।
जिसकी आंखों में पानी नहीं,
उसके हक़ में दुआ कीजिए।
आप 'ग़ाज़ी' है माना मगर
अपनी हद में रहा कीजिए।

जन्मः 08.03.1976 **शिक्षाः** बी.एस.सी.(जीव विज्ञान), **संप्रतिः** पत्रकारिता **विशेषः** उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से २००५ के लिए 'जुगुल किशोर शुक्ल सम्मान' **प्रसारणः** आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से ग़ज़लों का प्रसारण **प्रकाशनः** विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में ग़ज़ल, समीक्षा, लेख, इंटरव्यू आदि का प्रकाशन
सम्पर्कः 123ए/1, हरवारा, धूमनगंज, इलाहाबाद-211011, मो०: 9335162091,

सजना की याद....

सजना की याद मन से जाती नहीं,
कैसे बीतता है दिन कह पाती नहीं,
दिन में रह भी लेती हूं,
मगर रात में सो पाती नहीं।
सजना की...............।
किया था वादा निभाएगें वह साथ,
मरते दम तक नहीं छोड़ेगे हाथ,
अब तो टूटे दिल को जोड़ पाती नहीं
सजना की याद मन से जाती नहीं।
कहते थे वह रखेगें हमेशा हमारा ध्यान
दिलाएंगे हमें सभी से सम्मान
बात उनकी ये, मन से भूल पाती नहीं
सजना की याद मन से जाती नहीं।
आंखों से अश्रु हमेशा बहते रहे,
जख्मों में दर्द हमेशा होता रहा,
अपने दिल को अब, समझ पाती नहीं,
सजना की याद मन से जाती नहीं।
हमारे दर्द का एहसास भी नहीं उनका,
दर्द देते रहे और मुस्कुराते रहे,
अब इस दर्द को सह पाती नहीं,
सजना की याद मन से जाती नहीं।
कैसे कहूं कि भुला दिया है तुझे,
वादा किया था हंसाने का, रुला दिया है मुझे
चाहती हूं मर जाना, पर मौत आती नहीं,
सजना की याद मन से जाती नहीं।

डॉ० मोनिका मेहरोत्रा 'नामदेव'

जन्मः 26.03.1984, **शिक्षाः**डी.फिल. अर्थशास्त्र, **प्रकाशनः** विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में, **विधाः** गद्य, पद्य, **संप्रतिः** आई आई पी एस, इलाहाबाद में प्राचार्य, **सम्मानः** काव्य गौरव सम्मान, नारी गौरव सम्मान, **प्रसारणः** आकाशवाणी इलाहाबाद एवं दूरदर्शन से प्रसारण
सम्पर्कः ए—306, जी.टी.बी. नगर, करैली, इलाहाबाद

प्रकृति की ओर

हरे-भरे खेत
लगते हैं अच्छे मुझे
चाहे उनमें लगी हो
फसल अरहर की ही।
गाँवों की पगडण्डियां
भाती है मुझे
भले ही ले जाती हों वे
एक निर्जन अन्धकूप की ओर।
गाँव के सीधे-सादे लोग
लगते हैं भले
भले ही हों वे बिलकुल अज्ञानी।
पता नहीं क्यों करता है आकर्षित
गांव मुझे
भले ही हो न
वहां कोई मेरा दोस्त
न मिलें कोई सुविधाएं
तब फिर क्या है, जो
खींचता है बार-बार मुझे
गाँव की तरफ।
प्रकृति के करीब
पहुंचने की अनुभूति
संभवतः
भर देती है मुझे
आनन्द और स्फूर्ति से।

शैलेन्द्र जय

संपर्कः
76—ए/1,
पुष्पांजलि नगर,
भावापुर, पो.
-जी.टी.वी.
नगर,
इलाहाबाद-
211016, मो0 9415649614

शीघ्र संदेश सम्प्रेषण रचना

1. यादों को हमने खोने न दिया, गमों ने हमें चुप होने नहीं दिया, आंखे जो आज भी भर आई उनकी याद में, पर उनकी हंसती हुई सुरत ने हमे रोने ना दिया।
2. एक लड़की के टीशर्ट के आगे लिखा था अमुल द टेस्ट ऑफ इंडिया. इसको देखकर संता ने भी अपनी जींस के आगे लिखवाया टीएमटी सरिया (मजबूती का वादा) है बेटा
3. पूरी दुनिया की सबसे खूबसूरत जोड़ी कौन सी?
'मुस्कुराहट और आंशु'
दोनों का एक साथ मिलना मुश्किल है, लेकिन जब ये दोनों मिलते हैं, वो पल सबसे खुबसूरत होता है
मो0 08957124490

पीढ़ियों का फर्क़

जिंदगी एक सूखे पत्ते की तरह है,
जैसे नहीं पता चलता कि भविष्य उसका क्या होगा,
रौंदा जाएगा पैरों तले या/किताबों में दबा होगा, वैसे ही नहीं जानता मानव/आने वाला कल,
और नहीं जानता क्या लाएगा आने वाला पल,
क्या लेकर आएगा वो,/खुशियों की सौगातें,
या लाएगा दर्द भरी कुछ रातें/जब होकर पत्ते अलग,
पेड़ो से गिरते हैं, होते हैं सूखे कटे-फटे, भूरे से होते हैं पोषण का फिर कोई,
दूसरा मार्ग नहीं होता औरे ऐसे जीवन का कोई सार नहीं होता
मानव भी अपनी तरुणाई में/खूब उड़ाने भरता है,
इतराता है यौवन पर, किसी की नहीं सुनता है,
पर होकर बूढा एक दिन/ वृद्धावस्था में पदार्पण करता है,
तब भी चाहता है वो सब बैठे उसके पास
सबको हो उसके अकेलेपन का एहसास,/
लेकिन जैसे पत्ते पेड़ो का/गुण बढ़ाते है,
पत्ते ही मिलकर पेड़ों को सम्पूर्ण बनाते है, /मदमस्त वृक्ष उन पत्तों का,/कर देता है त्याग,
और नहीं रखता है उनसे कोई अनुराग

सृष्टि कुशवाहा
जन्मः 11.08.1987
गतिविधियांः नेट क्वालीफाई शोध छात्र, भजन गायिका, संपादन-आनंद योग पत्रिका
संपर्कः सैनिक कॉलोनी, धूमनगंज, इलाहाबाद, इलाहाबाद मो० 8081032490

निः सहायक किशोरी

गली में निकलती है।
सैकड़ो खुंखार भूखी नजरे पीछा करती है उसका।
झरोखे के पास खड़ी होकर बाल संवारती है तो।
ठिठक जाते है कई मनचले पांव।
छत में जाती हैं तो।
चांद चकोर की तरह नीहारता हर कोई।
बस में सटकर उससे।
खड़ा होना चाहता हर कोई।
सीट पर बैठी हो तो।
सरकाता है अपना हाथ उसकी तरफ।
गली बाजार मोहल्ला चौराहा।
कहां छोड़ती है उसे हैवान हवस की अन्धी आंखें।
कभी महफूज नहीं अब उसकी अस्मत।
गर्भ में भी तो सुरक्षित नहीं उसका तन।
अब वह अबला बन बचाव को बाहर भागी।
समाज का भी तो जबाब था..........
तू नहीं कोई नर्मदा बांध ने कोई आरक्षण का मुद्दा।
जिसे बचाने की खातिर मार काट करे सत्ता।

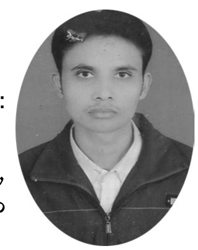

अम्बरीश शुक्ल
पुत्रः श्री शीतला प्रसाद शुक्ल **शिक्षाः** परास्नातक-हिन्दी,
सम्पर्कः उमरिया बादल, पो. उमरिया सारी, सोराम, इलाहाबाद-212506 मो० 9026594341

हर पल आगे

हलचलों से आगे है हम
सूरज चाँद सितारे है....
हर पल आगे बढ़ते है हम
हर पल आगे बढ़ते है.....
नित्य गगन मे झूम -झूम कर
अपनी मंजिल चुनते है
आंधी-तूफानों के बीच भवर में
अपनी राह बनाते है
अपनी राह बनाते है.....
हर पल आगे बढ़ते है हम
हर पल आगे बढ़ते है
खेतो की हरियाली है हम
अपने देश की शान है
अपनी मुट्ठी मे बंद रखते
आंधी और तूफान है
आंधी और तूफान है.....
हर पल आगे ...
वक्त की टिक-टिक से पहले
हम अपना कदम बढ़ा देते
हम है सजक और आत्मनिर्भर
यही हमारी पहचान है
यही हमारी पहचान है...
हर पल आगे बढ़ते है हम...
सागर से भी गहरे है हम,/और
नभ जैसा विस्तार है
हम तो है वो गंगा-यमुना
जहा हर एक का सत्कार है
हर एक का सत्कार है...
हर पल आगे बढ़ते है हम..
अपनी मंजिल चुनते है..

यशस्वी द्विवेदी
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

युवा रचनाकार

हुमा फात्मा

खोये हुए लम्हों का समां ढूंढ रहे है।
हम रेत पे कदमों के निशां ढूंढ रहे है।
जिस उम्र में न फिक्र थी न रन्जों अलम था
बचपन का वही प्यारा जहां ढूंढ रहे है
बैठे है यहां दिल में तेरी आस सजाये
आ जा कि तेरी राहे निहां ढूंढ रहे हैं।
किस बात की सज़ा मेरे दिलबर ने दिया है
हम जीस्त के जख्मों के निशां ढूंढ रहे है!
जिस घर में सदा आती हो अल्लाह की रहमत
हो पुरसुकून ऐसा मकां ढूंढ रहे है
हम ढूढते फिरते है जिन्हें राह में अक्सीर
वो दिल में हमारे है कहां ढूंढ रहे है।

शिक्षाः एम.ए. **विधाएः** कविता, गीत, ग़ज़ल, नज़्में इत्यादि **गतिविधिः** पत्र पत्रिकाओं एवं आकाशवाणी से कविताओं का प्रसारण, **सम्पर्कः** 39पी/11ए, डायमण्ड कॉलोनी, करैली, इलाहाबाद,मो0 8799569098

अवधेश 'अनुरागी'

जिन राहो से आज हम गुजरते है
उन्हीं राहो से कल, तुम्हें गुजरना होगा।
तुम्हारी आंखों से कलम होते है आशिक
खता ये तुम करती हो, तुम्हें सुधरना होगा।
आज मिटा दो ख्याल हमारा अपने जहन से
याद कल आऊंगा तो तुम्हें संवरना होगा।
जब जानोगी कि हमारी हकीकत क्या थी
अपने अतीत से ही तुम्हें लड़ना होगा।
अगले जन्म से हमें जरुर मिलना 'अनुरागी'
वरना तुम्हारी खातिर फिर से मरना होगा।।

जन्मः10.08.1995,
शिक्षाः बी.ए. प्रथम
पिताः श्री मधुवन यादव
सम्पर्कः १०६, पूरे सूरदा झूंसी, इलाहाबाद, उ.प्र. मो0 9125963668

देखा है तुम्हें शशि की शीतलता में

देखा है तुम्हे शशि की शीतलता में
और पाया है पुष्पों की सुगंधता में
हृदय के दर्पण में बसे हो तुम ही
और देखा है तुम्हें कलियों की कोमलता में
देखा है तुम्हें शशि की शीतला में,
तुम ही मेरी अधरो की मुस्कान हो
तुम ही धड़कन और तुम ही प्राण हो,
मेरे जीवन की तुम शान हो/देखा है तुझे रवि की उज्जवलता में/देखा है तुम्हें शशि की शीतलता में,/आओ देखे तुम्हें हम अपने मन में/ज्योति प्रेम की जलाए जीवन में/तुम हो शामिल इस मस्त पवन में/तू है शामिल हर सुंदरता में/देखा है तुम्हें शशि की शीतलता में।

शादमा बानो 'सानेहा'

जन्मः15.08.1986, **शिक्षाः** एम.ए. **गतिविधिः** पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन, आकाशवाणी से प्रसारण, **सम्पर्कः** ३६पी/११ए, डायमण्ड कॉलोनी, करैली, इलाहाबाद, मो0 8799569098

रंगीन पानी

एक शराबी मुझसे पूछा, पीतो हो जाम?
मैंने उससे झटसे पूछा, क्या है इसका काम?
वह कहने लगा, यह भुला दे सारे गम।
मैं सोचने लगा, यह तो बना देती बेशर्म।
वह हंसते-हंसते मुझसे बोला,/करवाती यह जन्नत की सैर।/मैंने चिन्तित स्वर में बोला,/या करवाए लोगों से बैर।
मैं मौका है अपने आप को बदल ले, समय है दोस्त, संभल ले।/तू छोड़ा शराब, यह कर देगी तुम्हें खराब।/शराबी तू पागल है, तू बेवकूफ, तू मूर्ख है,/यह करती नहीं किसी का नाश,/देती सिर्फ सुखद् एहासास।/अब बंद करो अपनी बकवास,/सिर्फ चख और बना ले इस पल को खास।/मैं रख अपना जाम अपने पास,/नहीं बनना मुझे इसका दास।/रंगीन पानी की गुलामी अब छोड़/और शुरू कर जीवन की नई दौर/नहीं तो एक दिन तू जरूर पछताएगा/क्या उस वक़्त खुद से नज़रे मिला पायेगा।

अविनाश गौरव

शिक्षाः छात्र स्कूल का फिल्म एण्ड मास कम्यूनिकेशन, इलाहाबाद मो० 8808175750

पीयूष मिश्र

क्या मिलेगा आपको सर फोड़कर।
कुछ निकालो पत्थरों को तोड़कर।।
तुम बनाओ प्रेम का प्यारा महल,
द्वेष की सारी दीवारें तोड़कर।
तुम चले जाओ जहां पर जान लो,
दर्द ही मिलते हैं घर को छोड़कर।।
जाने कैसे जी भी लेते है यहां
बेटे अपने बाप का घर छोड़कर।।
अब कहां जाऊँ मुझे तू ही बता,
तेरी परछाई का आंचल छोड़कर।।
मैं करूं तो आप भी कर दीजिये,
प्रेम का आगाज बन्धन तोड़कर।
आपको जाना है तो जाओ मगर
बहुत पछताओगे हमको छोड़कर।।

जन्मः19.05.1986, **शिक्षाः** परास्नातक **उपलब्धियांः** पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन, आकाशवाणी से प्रसारण, विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मान मानवता कुलम्' लखनऊ द्वारा अभिनन्दन पत्र,, 'भारत संस्कृत परिषद' दिल्ली प्रशस्ति पत्र
सम्पर्कः ६६१, पुराना कटरा, इलाहाबाद -२११००२ मो० ६१६१११३५४८

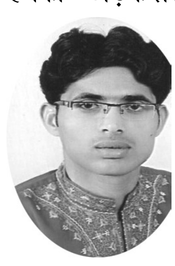

पुष्प बनाम मानव

एक दिन पुष्प/हत, विक्षत निराश मानव
को/असहाय जानकर/हंस पड़ा
कुछ समय तक/अन्तर्द्वन्द चलता रहा
मानवीय अन्तस्थल में/अन्ततः
क्रोध से बोला-/रे दुष्ट!
हृष्ट पुष्ट नवल पुष्प/हंस रहा है?
शायद तूने देखा नहीं
दुःख वियोग निराश को/हंस रहा है
अभिग्रसित निराश जानकर
हंस कर पुष्प बोला-/सुन रे मानव!
मैं अतल वितल पाताल तोड़
भूमि की चट्टान फोड़/आ खड़ा हूं
मुसीबतों के द्वार पर/झेलता हूं
शौक से/तीक्ष्य-सर्द, ग्रीष्म, बरसात
तूने क्या कहा?/मै होता नहीं निराश
मैं कोई कायर नहीं हूं जान ले
वीर हूं, वीरता मेरी पहचान ले
होगा कोई योद्धा मगर
वह डर रहा है आज भी
मुझसे जहां पर/हंस रहे है
आज चाँद तारे व दिनकर
आलम्बन आज मेरा पाकर/दुष्ट!
क्या हंसेगा तू?/इस जमीं पर
शौक से हंस कर/जीना नहीं जानता।

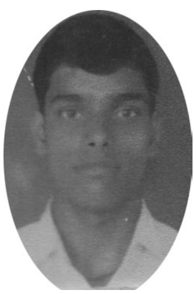

सुशील द्विवेदी
जन्मः 03.08.1995
शिक्षाः बी.ए. द्वितीय वर्ष **विधाः** ग़ज़ल, कविता **उपलब्धियांः** गुफ़्तगु प्रकाशन द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं विभिन्न कॉलेजों द्वारा प्रशस्ति पत्र
सम्पर्कः पश्चिम शरीरा, कौशाम्बी, इलाहाबाद
मो० 9305503654

गुरू

सबसे ऊँचा गुरू का स्थान,
बच्चों इसका कर लो ज्ञान।
मिट्टी को वह स्वर्ग बनाता,
आरभित में वर्ण पढ़ाता।
उससे छोटा है भगवान,/अति ऊँचा गुरु का स्थान।/यह कहकर मांगे गुस्ताखी,
एक बालक तब मांगा माफी।
गुरु सम्मुख बन गये झूठे,
क्यों गुरु अब मुझसे रुठे?
सदा करो गुरु का सम्मान,/अति ऊँचा गुरु का स्थान।/पास नहीं कुछ तो अब क्या कहना?/अब तुम्हें यहां पर नहीं है रहना।/मैं अनाथ तात मात बिन,
नहीं पढ़ाऊँगा पैसा बिन।/मन में गुरु को सब धिक्कारे,/क्रोध नयन से सभी निहारे।
दीन हीन की गुरु पर आस,/गुरु चाहे तो कर दे नाश।/विनती बहुत, सुनीना उसकी, गया विचार बदल अब उसकी।/धन ऐसा जो मन को बदले,/ऐसे गुरु ना पापी कहले।/इससे अच्छा दीन इन्सान,/सबसे नीचा है स्थान।।

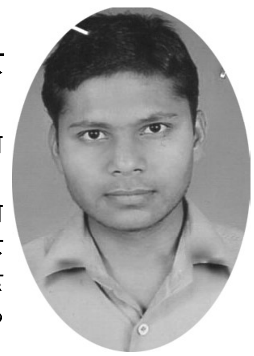

राहुल कुमार गौतम
पिताः श्री राम सुभाय गौतम
सम्पर्कः काली प्रसाद इण्टरमीडिएट कॉलेज, इलाहाबाद
मो० ९६१९८१५७४१

एक संदिग्ध सच

सिलवटें इंसानी जिस्म की/या फिर जिस्मानी इंसान की/कितनी संदिग्ध.........सच।
भावनाओं का वास्तविक हनन हमसे
या फिर हमारी स्थितियों से,
कितना संदिग्ध..सच।
सामाजिक चेहरों पर आवरण
या फिर आवरण पर एक और सामाजिकता,
कितना संदिग्ध.........सच।
स्वार्थी जगत के सत्य व असत्य की क्रीड़ा में विजयी (?) कौन,
झूठा सच या सच्चा झूठ
कितना संदिग्ध..सच।/आईने में धुंधलाहट/या फिर चेहरे में मलीनता
कितना संदिग्ध........सच।

अंकिता साहू
सम्पर्कः एम. ए-प्रथम वर्ष, इलाहाबाद विश्वविद्यालय,मो० 7376536682

महाकुंभ

अचानक मन में/एक हलचल सी हुई/कि चलो आज संगम घूम आये,/बंधुआ बांध के सड़क पर/पहुँचते ही/पैर अचानक रुक गये/मेरा आतंरिक कलाकार मन /सुन्दर नज़ारा देख/ अलग-अलग फ्रेम बनाने में लग गया,/श्रद्धालु रोमांचित होते दिख रहे थे,/ चलते-चलते/थके पावं जवाब दे रहे थे/घूमते-घूमते जा पहुंचें/संगम नोज़ पर/एक खाली लकड़ी का तखत देखकर/हम वही बैठे/थोड़ी ही देर में/एक बूढ़े बाबा थकी हालत में/मेरे बगल में आकार बैठ गये,/हमने उन्हें देखा/ और/ उन्होनें हमें,/वो मुझे देखकर मुस्कुराये/और हम भी.../थोड़ी देर बाद/बोले../कितना सुन्दर लगत/हाऊ ई नज़ारा.हमने उनकी तरफ देखा/चेहरे पर झुर्रियाँ/और. ..मुहँ में कुछ हि दांत/मानो मेरी पेंटिंग का/एक पार्ट../थक कर बैठ गये थे/हम दोनों थके हारे तखत पर बैठे/एक ही/दृश्य देख रहे थे,/फिर वो बोले/अगर गंगा मईया न होतीं/तो हमार आखं ई/देखन को तरस जात/कि आज भी लोगन मा/धरम-करम, दान-पूण,/अउर धरम के प्रति विश्वास/आज भी जिन्दा है

दुनियन में इतना पाप बढ गवा/कि केहू आपन बुरा करम ना बदलहीं,/ लेकिन आपन पाप धोए के खातिर/गंगा माँई में डुबकी जरुर मारहियें!/अगर. /ऊँच-नीच,जात-पात, लुट-पाट/ भ्रष्टाचार! /इहै गंगा में आइके समाई जाइए/तो फिर से../हमार देश सोने की चिड़िया कहिलाए/फिर अचानक वो जोर-जोर से चिल्लाये/हे..हे..सितवा/ इधर देखा..हम इधर बईठा हई, /मैंने पूछा बाबा ऊ कउन बा../बाबा बोले अरे बिटिया../ऊ हमार मेहरारू बा,/मैंने कहा!/बईठा!/हम बुलाई के लाई थी!/लौट आने पर/दर्द भरी आवाज़ में/बाबा बोले../हमहूँ ढूढ़त-ढूढत थकाई के/यहीं पा बईठ गये/हमका लगा की ई ‘महाकुंभ’ मा/तुह हेराई गई अब बूढ़ी माई बोली../हमहूँ ढूढ़त-ढूढत डराई गई रहे/कि तुह हमका अब कबहु न मिलबू/अउर ई..बुढ़ऊ यहाँ बईठा हई/बाबा बोले..अरे! अरे!/सितवा हमहूँ थकाई गईल/बाबा बोले जाई थी बिटिया/हमने पूछा बाबा माई का नाम सीता बा?/हाँ बिटिया/ई हमार जीवन बा!/हमने पूछा बाबा/अउर आपके का नाम बा?/बाबा बोले.../हमार नाम!/‘वर्तमान’ बा।

पूनम किशोर

जन्मः04.11.80

शिक्षाः एम.एफ.ए इन पेंटिग

स्थायी पताः ३, स्टैची रोड (निकट अंसल) सिविल लाइंस, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

ई-मेलः kamal-ht@ gmail-com

मो०-9336691645

दहेज रुपी दानव

बाप परेसान बा, बिटिया सयान बा।
बिटिया के वर खातिर दहेज लेत जान बा।
सोचता कईसन इ बाटे जमनवा।
रुपीया खातिर सेनुरा भईल ना समनवा।
एक गरीब खातिर बेटी, जी क जंजाल बा।
बाप परेसान बा, बिटिया समान बा।
एक त गरीबी बाटै दुजै महंगाई।
दहेज रूपी दानव सुख चैन लेता खाई।
कइसी होई विदाई, वर क बड़ मांग बा।
बाप परेसान बा, बिटिया समान बा।
कहे भगवान काहे, बनला निरदइया।
बेटी देके काहे न देहला रुपइया।
का हमरे जिनगी में असुअन क खान बा
बाप परेसान बा, बिटिया समान बा।

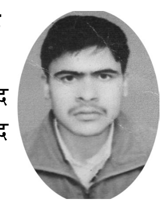

भानु प्रकाश पाठक

शिक्षाःस्नातक-प्रथम वर्ष, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

मो० ८४०८२३०६२२

हिन्दी में सर्वाधिक अंक पाने वालों को छात्रवृत्ति

हिन्दीत्तर भाषियों को सुश्री शांताबाई हिन्दी छात्रवृत्ति व हिन्दी भाषी राज्यों में स्व.पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति हिन्दी छात्रवृत्ति

इंटरमीडिएट व स्नातक स्तर पर हिन्दी विषय में 80प्रतिशत अंक पाने छात्र/छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी. इसमें छात्र/छात्रा को इंटरमीडिएट व स्नातक स्तर के अंक पत्र की प्रधानाचार्य/प्राचार्य/विभागाध्यक्ष से प्रमाणित छाया प्रति, नाम, पिता का नाम, सम्पूर्ण पता, एक फोटो, दूरभाष/मोबाइल संख्या/ई मेल के साथ ३० जनवरी 2013 तक भेजना होगा. इसमें चयनित छात्रों को 100 रुपये से लेकर 500/रुपये मासिक तक की छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी.

विशेषः

01 छात्रवृत्ति की संख्या का निर्धारण संस्थान द्वारा प्रत्येक वर्ष किया जाएगा। 02 हिन्दीत्तर भाषी छात्र/छात्राओं को वरीयता दी जाएगी. प्रत्येक वर्ष अंक पत्र भेजना अनिवार्य होगा. तब तक हिन्दी विषय में 80प्रतिशत या उससे अधिक अंक मिलते रहेंगे यह छात्रवृत्ति जारी रहेगी. 03 विवरण के साथ एक नाम पता लिखा लिफाफा, व २५ रुपये का डाक टिकट भेजना होगा. 04 जिस विद्यालय के छात्र/छात्राओं का चयन लगातार पांच वर्ष तक होगा उस विद्यालय के हिन्दी विषय के प्राध्यापक/विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. 05 जो प्रतिभागी लगातार तीन वर्ष तक यह छात्रवृत्ति प्राप्त करेगा उसे हिन्दी उदय सम्मान से एक गरिमामय कार्यक्रम में सम्मानित भी किया जाएगा. अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव के लिए निम्नलिखित पते पर लिखेंः

सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, उ.प्र.मो० 09335155949 **email:** sahityaseva@rediffmail.com

लघु कथा

निर्णय

✍ डॉ० दुर्गाशरण मिश्र
शिक्षाः एम.ए. (राज. शास्त्र), एम.ए.(हिन्दी) एल.एल.बी, पी.एच.डी.(राज.शास्त्र)
संप्रतिः प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
वर्तमान पताः सी.ए.टी.सी, बमरौली, इलाहाबाद मो०:9792046333

बेनसागर गाँव और उसके पूरब स्थित धामिन पहाड़ियों पर करवटे बदलती काव नदी. पंडित मदन मोहन शास्त्री के बाईस वर्षीय पुत्र मुरारी तथा शास्त्री के चचेरे भाइयों के खेतों को बटाई पर जोतने वाले रामन की बीस वर्षीया पुत्री मालती का रम्य स्थल. पर मालती चाह कर भी यह भूल नहीं पाती थी कि वह दंभी शास्त्रियों के खेतों पर पलती है तथा अब उसकी जवानी उनकी घिनौनी निगाहों में आने लगी है. यह सब भूलने के लिए वह सीधे-सादे मुरारी की रसवंती आँखों में धीरे-धीरे उतरने लगी थी, पर डर-डरकर. उसे वहां प्रकाश दिखता था. काव नदी की एक साप्ताहिक सुरमई शाम.

'धर्म से कहो मुर! तुम कहीं धुँए के बादल तो नहीं उड़ा रहे?' मालती खुद को मुरारी की मजबूत पकड़ से छूड़ा, पास के झरने की जलधाराओं को अपने हाथों समेटने का प्रयास किया.

'अहह मालती! भला यह भी कोई पूछने की बात है. मेरी रग-रग में तुम्हीं तो हो. बोलो! दिखाऊँ क्या अपनी नसें चीरकर? हाथ कंगन को आरसी क्या! सच, मैं झूठों नहीं कह रहा. मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ देवी.' वह अपने दोनों हाथ फैलाए मालती की ओर बढ़ा.

'ओहो! चलो मान गई कि मैं तुम्हारे रगरेशे में हूँ. मेरे लिए ही तुम इन पहाड़ो में मारे-मारे फिरते हो और मेरी तलाश में क्षितिज तक देख जाते हो. गनीमत है कि पत्थर नहीं हुए हो, नहीं तो मैं दबकर रह जाती. ' मुरारी को चीते के समान अपनी ओर बढ़ता देख, उस पर कलकूजक झरने के शीतल जल की बौछार करते व बिजली की कौंध-सी हंसी हंसते मालती ने कहा. मालती की बात से उत्साहित हो, हृष्टरोम मुरारी ने मालती को अपने भुजबाथ में लेकर, सिलहिली शिलाओं से भरे काव के ठंढे जल में छोड़ दिया.

'धत् अगिया बैताल भींग गई न. ऊपर से मैं कपड़ों से भी हूं और मेरे पास दूसरा कपड़ा भी नहीं है....तुम तो खाली बदन रह सकते हो और मैं .....छोड़ो जाओ अपनी कंदरा में, पाषाण बन पड़ जाओ बैरी कबूतरों के परों के बिछौने पर और डूब जाओ महाकवि जयशंकर में.' अपने भींगे बदन से चिपके कपड़े को धीरे-धीरे उठाते हुए, कुछ झिड़की के साथ मालती भौंह चढ़ाकर बोली.

'अरे तुम तो बुरा मान गई. मैंने तो मजाक किया था. पर, जरा देखो तो साँचे में ढला अपना मनोहारी बरसीला शरीर. एकदम जलमानुषी लग रही हो. यदि मैं चित्रकारी जानता तो तुम्हारे इन्द्रधनुषी सलोनेपन को कैनवास पर उतारकर अपने सीने से लगाया फिरता. सच मैं मुँह देखकर बात नहीं कर रहा.' मुरारी मालती को मदभरी चितवन से देखते, उसे सहारा देने के लिए आगे बढ़ा.

'अरे, जाओ! बड़े नयनवन्त बनते हो. हमारे अपने संबंध को जब तुम्हें डंके की चोट पर किसी के मुँह पर कहने की हिम्मत नहीं, तो मेरा बरसाती चित्तर, सीने से लगाए क्या खाक घूमोगे! बड़े आए हो बावन वीर बनने! मुझे अपने शब्द जाल से दूर ही रखो और मेरी भलमानसी का फायदा मत उठाओ, समझे?' मालती अपनी बायीं कुहनी मुरारी की ढ़ीली पकड़ से छुड़ा, पास की सांपिया कंदरा में लटकती चाल में घुसकर, पीछे खुले खिड़कीनुमा दरवाजे के बारजे पर, शास्त्रियों का कदन्न पुनः न खाने का निर्णय लेती हुई अपनी मुट्ठियाँ भींच ली.

नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता

रचनाकारः
बालाराम परमार 'हंसमुख'
मूल्यः 50/रुपये मात्र

प्रकाशकः
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, उ.प्र. -२११०११ मो०६३३५१५५६४६

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान** द्वारा 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

01-**कैलाश गौतम सम्मान**-(हास्य/व्यंग्य रचना), 02-**डॉ.किशोरी लाल सम्मान**-(श्रृंगार रस की रचना), 03–**हिंदी सेवी सम्मान**- (विदेशी/अहिन्दी भाषी नागरिक-किसी भी विधा की रचना), 04-**राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). 05-**राष्ट्रभाषा सम्मान** -(अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए) 06-**कला/संस्कृति सम्मान**-(संगीत, नाटक, पेंटिग, नृत्य आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए), 07-**बाल साहित्यकार सम्मान**-(उम्र २१ वर्ष)-किसी भी विधा की एक रचना, 08- **राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान**-(हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण) 09-**राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान, प्रमाणिक विवरण), 10-**पुलिस हिंदी सेवा सम्मान**-(पुलिस सेवा में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए), 11-**सांस्कृतिक विरासत सम्मान**-(भारतीय/स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए, प्रमाणिक विवरण) 12-**प्रवासी भारतीय सम्मान** (प्रवासी भारतीय जो हिंदी की किसी भी विधा में लिख रहे हों.) 13-**युवा कहानीकार/युवा व्यंग्यकार/युवा कवि सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम) 14-काव्यश्री 15-कहानीश्री, 16-ग़ज़लश्री, 17-दोहाश्री, 18-**विधि श्री** (विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए), 19-**डॉक्टरश्री** (डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी की सेवा के लिए)20-**शिक्षकश्री** (शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए)21-**सैनिक श्री** (सैन्य सेवा में कार्य करते हुए हिंदी सेवा के लिए),22-**विज्ञान श्री** (विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है) 23-**प्रशासक सम्मान/प्रशासकश्री** (कुशल प्रशासन अथवा किसी भी प्रकार से हिंदी को बढ़ावा देने के लिए) 24-**विहिसा अलंकरण**-हिन्दी की किसी भी विधा में प्रकाशित/अप्रकाशित 100 पृष्ठों की एक किताब के लिए,

उपाधियां उपाधियां प्रकाशित/अप्रकाशित कम से कम १०० पृष्ठीय कृति पर ही प्रदान की जायेगी. **साहित्य के क्षेत्र में**: साहित्य भूषण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सम्राट, कहानी सम्राट, कहानी रत्न, काव्य रत्न, काव्य श्री, काव्य शिरोमणि, दोहा श्री, ग़ज़ल श्री **समाज के क्षेत्र में**: समाज शिरोमणि, समाज रत्न, समाजश्री, **पत्रकारिता के क्षेत्र में**: पत्रकार शिरोमणि, पत्रकार रत्न, पत्रकारश्री

<u>विशेष</u>:१. प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित विधा की एक रचना, विवरण के सम्बंध में प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और २०० रुपये मात्र का धनादेश/ बैंक ड्राफ्ट/ मल्टी सिटी चेक अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

२. प्रतिभागी सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जाएगी. जो जनवरी 2014 से लागू होगी. किसी भी दशा में रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी.

३. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. संस्थान को प्राप्त रचनाओं को प्रकाशित करने का अधिकार होगा. किताबों पर हस्ताक्षर न करे। सम्मान किसी भी परिस्थिति में डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा और न अपूर्ण प्रविष्टियों पर विचार किया जाएगा. प्रविष्टि भेजने के पूर्व मांगी वांछित सामग्री को सुनिश्चत करलें

४. प्रत्येक सम्मान के लिए एक विद्वजन का ही चयन किया जाएगा जो सर्वोच्च होगा. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. किसी प्रकार

के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा. सम्मान समारोह इलाहाबाद में आयोजित किया जाएगा. चयनित सभी विद्वद्जनों को डाक से/दूरभाष/ई-मेल के माध्यम से सूचना दी जाएगी.

अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २०१३

अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

सचिव, **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,**
एल.आई.जी-६३, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.
मो०: ०९३३५१५५९४६, ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com

सम्मान हेतु आवेदन पत्र

सेवा में
सचिव
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
इलाहाबाद

विषयः ....सम्मान/उपाधि हेतु प्रविष्टि संदर्भः
महोदय,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले...सम्मान/उपाधि हेतु मैं अपना आवदेन प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा आत्म विवरण निम्नवत हैः-

नामः ....पिता/पति का नामः...
पताः...
....
दू०/मो०संख्या........................ईमेल-..........................
रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः..विधा...................वर्ष.........................
प्रेषित प्रतियाँ............. धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक का विवरण, राशि....................बैंक का नाम.........................
संख्या.......................

मैं शपथपूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूं कि ०१ प्रेषित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होऊंगा. ०२ मैंने संस्थान के पुरस्कार/सम्मान संबंधी नियम पढ़ लिए हैं और मुझे स्वीकार्य है.

प्रस्तावक
नाम.............................
हस्ताक्षर.........................
पूरा पता.......................

भवदीय/भवदीया
हस्ताक्षर....................................
पूरा नाम....................................

सलंग्नक
०१ सचित्र जीवन परिचय-एक प्रति ०२ टिकट लगा लिफाफा/पोस्टकार्ड-एक ०३ धनादेश/बैंक जमा पर्ची छाया प्रति-एक
०४ सम्बन्धित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि- तीन प्रतियों में

'अपनी कलम' हेतु रचनाएँ आमंत्रित हैं

काव्य खंड के लिए के लिए १० गीत/१०ग़ज़ल/१० नई कविताएं,/१००दोहे **गद्य खण्ड** के लिए ५ लेख/५ संस्मरण **कहानी खंड** के लिए ५ कहानियां/१० लघु कथाएं

प्रत्येक खण्ड के लिए प्रत्येक रचनाकार को १५ पृष्ठ दिए जाएंगे. सहयोगी आधार पर प्रकाशित होने वाले इस संकलन के लिए रचना के साथ, सचित्र जीवन परिचय, व १५००/रुपये 30 सितम्बर 2013 तक अपेक्षित है. (अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०:एस.बी. 538702010009259 में अथवा धनादेश/डी.डी. सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते हैं.) अपनी रचनाएं निम्न पते पर प्रेषित करें:

प्रसार सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011
ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

बाल कहानी

सच्चा शिष्य

-डॉ. विनय कुमार मालवीय
शिक्षाः एम.ए., पी.एच.डी.
संपर्कः ६६३/६०५, मालवीय नगर, इलाहाबाद
मो०:

मास्टर साहब ने कक्षा में लड़कों से कहा, 'तुम लोग किताब का पेज नम्बर पच्चीस खोलकर पढ़ो. अभी मैं पूछूँगा' लड़के अपनी-अपनी किताब खोलकर पढ़ने लगे. मुकेश अपने बगल में बैठे सतीश की किताब को झुककर पढ़ने लगा. इस पर मास्टर साहब ने कहा, 'मुकेश, अपनी किताब पढ़ो. दूसरे को परेशान मत करो.'

अब मुकेश क्या करता. उसके पास तो किताब ही नहीं थी. उसकी डेस्क पर किताब न देखकर मास्टर साहब ने पूछा, 'तुम्हारी किताब कहाँ है? क्या तुम किताब नहीं लाए?' मुकेश के कुछ न बोलने पर मास्टर साहब ने बिगड़ते हुए कहा, 'पता नहीं आजकल के कैसे लड़के हैं? कॉलेज चले आएंगें परन्तु किताब नहीं लाएँगें. हम लोगों के समय ऐसा नहीं था. हर लड़का पूरी किताब-कापी लेकर कॉलेज आता था' फिर उन्होंने कहा, 'सब लोग अच्छी तरह सुन लो, अगर कल से कोई किताब नहीं लाएगा तो उसे कक्षा से निकाल दिया जाएगा.'

घर पहुँचने पर मुकेश ने यह बात अपनी माँ को नहीं बतायी, क्योंकि वह उन्हें बताकर दुःखी नहीं करना चाहता था. दूसरे दिन उसने अपनी परेशानी सतीश को बतायी. सतीश उसका सच्चा दोस्त था. उसने कहा, 'इसमें परेशान होने की क्या बात है? चलो, लाइब्रेरी में देखा जाए. अगर वहाँ किताब होगी तो उसे अपने नाम ईशू करा लेना.' संयोगवश लाइब्रेरी में वह किताब मिल गयी और मुकेश ने उसे अपने नाम ईशू करा लिया. किताब रखने की अवधि पूरी होने पर जब मुकेश ने लाइब्रेरी में पुस्तक जमा की तब सतीश ने उसे अपने ईशू कराकर उसको पढ़ने के लिए दे दिया.

इस प्रकार उस किताब को कभी मुकेश अपने नाम ईशू करा लेता और कभी सतीश. मुकेश पूरे सत्र उसी किताब से पढ़ता रहा. वार्षिक परीक्षा शुरू होने के कुछ दिन पूर्व मास्टर साहब ने कक्षा में कहा, 'जिन लड़को ने लाइब्रेरी से किताब ईशू करायी है, उसे जमा कर दें अन्यथा उन्हें परीक्षा में बैठने नहीं दिया जाएगा.'

यह सुनकर मुकेश घबड़ा गया. अभी तक वह लाइब्रेरी की किताब से ही पढ़ता था. उसने किताब नहीं जमा की. परीक्षा प्रारम्भ होने के दो दिन पूर्व कक्षा में मास्टर साहब ने बताया कि लाइब्रेरी से मिली सूचनानुसार मुकेश ने अभी तक एक किताब नहीं जमा की है. उन्होंने मुकेश से पूछा, 'तुमने अभी तक किताब क्यों नहीं जमा की? कल जरूर जमा कर देना. मैंने कई दिन पहले कहा था, परन्तु तुमने ध्यान नहीं दिया. आजकल तुम्हारा मन पढ़ने में नहीं लगता.'

मुकेश उन्हें क्या बताता. दूसरे दिन उसने सतीश के साथ जाकर लाइब्रेरी में किताब जमा कर दी और लौटकर मास्टर साहब को बता दिया.

मास्टर साहब ने सूची से मुकेश का नाम काटने के बाद गौर से उसे देखा तो उसका चेहरा मुर्झाया हुआ प्रतीत हुआ. उन्होंने पूछा, 'क्या बात है? दुःखी क्यों हो? कल से तुम्हारी परीक्षा है. तुम्हें खुश होकर पढ़ना चाहिए.' इस पर सतीश ने कहा, 'सर! मुकेश के पास अंग्रेजी की किताब नहीं है. अभी तक यह लाइब्रेरी से उस किताब को कभी अपने नाम और कभी मेरे नाम ईशू कराकर पढ़ता था, परन्तु आज उसे लाइब्रेरी में जमा कर दिया. अब परीक्षा के समय कैसे पढ़ेगा. यह सोचकर उदास है.'

मास्टर साहब को बड़ा आश्चर्य हुआ. उन्होंने किताब के बारे में कुछ पूछना उचित नहीं समझा. उन्होंने सतीश से कहा, 'तुम सच्चे दोस्त हो. तुम अपने नाम किताब ईशू कराकर मुकेश को पढ़ने के लिए दे देते थे. यह बहुत अच्छी बात है.'

वे कुछ देर इस विषय में सोचते रहे. फिर उन्होंने मुकेश से कहा, 'शाम को घर जाते समय मुझसे जरूर मिल लेना.'

शाम को छुट्टी के होने पर मुकेश मास्टर साहब के पास गया. उन्होंने उसे एक किताब देते हुए कहा, 'इसे अपने पास रख लो. परीक्षा के बाद मुझे लौटा देना.'

मुकेश ने किताब को देखा तो आश्चर्य में पड़ गया. यह वही किताब थी, जिसे उसने आज सुबह लाइब्रेरी में जमा

किया था. उसे बार-बार किताब को उलटते-पलटते देखकर मास्टर साहब ने कहा, 'इस तरह क्यों देख रहे हो? यह वही किताब है जो तुमने आज सुबह लाइब्रेरी में जमा किया है. इसे मैंने अपने नाम ईशू करा लिया है. अब तुम निश्चिन्त होकर पढ़ो.'

मुकेश किताब लेकर खुशी-खुशी घर चला गया. परीक्षा समाप्त होने के बाद उसने मास्टर साहब को किताब लौटा दी.

इस घटना के कई वर्ष बाद एक दिन मास्टर साहब अपनी पेंशन के सम्बन्ध में ऑफिस गये. वहां वे अभी इधर-उधर देख ही रहे थे कि एक लड़के ने पहुंचकर उनका चरण स्पर्श किया और पूछा, 'सर, आप यहां कैसे आये? क्या यहां कोई काम है?'

'मैं यहां अपनी पेंशन के सम्बन्ध में आया हूं.' मास्टर साहब ने बताया 'लेकिन तुम कौन हो?'

इस पर वह लड़का बोला, 'सर! मैं आपका वही मुकेश हूं, जिसे आपने कई वर्ष पूर्व अंग्रेजी की एक किताब लाइब्रेरी से अपने नाम ईशु कराकर परीक्षा के समय पढ़ने के लिए दी थी.

फिर वह मास्टर साहब को अपने अनुभाग में ले गया. उसने भागदौड़ करके मास्टर साहब का कार्य कराया. चलते समय मास्टर साहब ने कहा, 'बेटा, तुम्हारे कारण मेरा कार्य जल्दी हो गया. तुमने मुझे पहचान लिया यह बड़ी बात है. वरना कहाँ कोई पहचानता है.'

'नहीं सर! मैं आपको कभी नहीं भूलूंगा. आप मेरे गुरु है. अब आपको यहां अनावश्यक आने की जरुरत नहीं पड़ेगी. ' मुकेश ने कहा.

मास्टर साहब ने उसे सीने से लगाया और आशीर्वाद देते हुए वहां से चल दिये.

गुजारिश

1. 'विश्व स्नेह समाज' आपकी अपनी पत्रिका है. इसे अकेले न पढ़ें, बल्कि दूसरों को भी इससे परिचित कराएँ. आप अपनी मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएँ ही भेजें. एक बार में अधिकतम दो ही रचनाएँ भेजें. उनके प्रकाशनोपरान्त ही दूसरी रचना भेजें. रचनाएँ पर्याप्त हासिया छोड़कर कागज के एक तरफ स्पष्ट सुपाठ्य अक्षरों में लिखी हुईं या टंकित होनी चाहिए. रचनाओं पर मौलिकता व उनके अप्रकाशित होने का उल्लेख अवश्य करें. बिना उचित टिकट लगे जवाबी लिफाफे के अस्वीकृत रचना लौटाई नहीं जाती.

3. रचना प्रेषण के कम से कम तीन माह तक अन्यत्र प्रकाशित होने के लिए रचना न भेजें और न ही कहीं प्रकाशित रचना भेजने. वैसे तो पत्रिका सभी बुक स्टालों पर उपलब्ध कराई जा रही है. फिर भी मिलने में असुविधा हो तो सदस्यता ग्रहण कर लें, पत्रिका डाक द्वारा भेज दी जाएगी.

4. सदस्यता शुल्क पत्रिका के खाते में सीधे जमा कर/ धनादेश/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'विश्व स्नेह समाज' के नाम भेजें. शुल्क के साथ-साथ एक पोस्टकार्ड भी भेजें, जिस पर अपना नाम व पता साफ-साफ लिखें.

5.जो रचनाएँ आपको अच्छी लगें उस बाबत रचनाकार को खत लिखकर अवश्य प्रोत्साहित करें.

6. 'विश्व स्नेह समाज' के परिशिष्ट अथवा प्रायोजित विशेषांक योजना में शामिल होने के लिए 09935959412 या 09335155949 पर सम्पर्क करें.

7. विश्व स्नेह समाज मात्र एक पत्रिका नहीं है बल्कि समाज में एक रचनात्मक क्रांति लाने की माध्यम है. इसे हर सम्भव सहयागे प्रदान करें.❑संपादक

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

१. प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर
२. बिक्री की व्यवस्था
३. प्रचार—प्रसार की व्यवस्था
४. विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रसार सचिव

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,

इलाहाबाद—211011

bs&esy% sahityaseva@rediffmail.com

27.02.2013 जन्म दिवस पर विशेष

संत शिरोमणी गुरू रविदास (रैदास)

-देवदत्त शर्मा 'दाधीच' छोटी खाटू वाले, जयपुर, राजस्थान, मो० 9414251739

यह भारत मेरी पुण्य भूमि, यह भारत मेरी धर्म भूमि,/यह भारत मेरी तीर्थ भूमि,/यह भारत मेरी कर्म भूमि, भारत माता की पूजा में,/परिमल पुष्पित पल्लवित किये, अर्चन वन्दन की बेला में, /अगणित प्रदीप प्रज्जवलित किये।। इस धरती के सन्तों ने, मानव हित बलिदान दिया,/सबकी सुख सुरक्षा, शांति का, सत्वर शाश्वत सम्मन किया।। यह राम-कृष्ण की जननी है,/यह महावीर बुद्ध की माता,यह कबीर, सूर, रैदास की महतारी, तुलसी मीरा की माता।।

सन्त रविदास का जन्म माघ शुक्ल पूर्णीमा के दिन सम्वत् 1433 सन् 1376 को काशी के पास भन्डूर गांव में हुआ. रविवार के कारण इनका नाम रविदास रखा गया. आगे बोल-चाल की भाषा में रैदास हुआ. पिता रघुनाथ, माता घूरविनिया दोनों ही भागवत् भक्त थे. स्वामी रामानन्द का इनके घर आना जाना था इस कारण उनमें दैवीय गुण उत्पन्न होने लगे. इनका विवाह बचपन में ही हो गया था-पत्नि सती साध्वी थी. अपना जीवन निर्वाह जूते बनाकर करते थे. और थोड़ी बहुत आमदनी में से गरीबों की सहायता करते. स्वामी रामानन्द के 12 शिष्यों में एक थे. इनकी भक्ति-भाव से काशी नरेश शिष्य हो गये थे. चित्तौड़ महाराजा उदयसिंह की रानी, आला भी उनकी शिष्या थी. भक्त मीरा बाई के गुरू भी रैदास थे. गुरू-ग्रंथ साहब की रचना में भी रैदास के पदों का समायोजन है.

उनके विचार थे कि मनुष्य त्याग-समर्पण व भक्ति भाव से ऊंचा उठता है. मनुष्य अपने लिये तो जीता है लेकिन उसे दूसरों के हितों के लिये भी त्याग करना चाहिये, तभी वह महामानव कहलाता है. कवि ने कहा है कि

जाति न पूछो साधु की, पूछ लिजिये ज्ञान,/मोल करो तलवार का, पड़ी रहनदो म्यान।

यह कहावत उनके ऊपर सटीक लागू होती है. इनके सन्दर्भ में कहान है कि वे जूते बनाने वाली पानी की कूंडी में सोने का कड़ा निकाला व गंगा के दर्शन किये, जब उन्हें ज्ञान हुआ तब रैदास जी के पास पहुंचे जब तक उनकी पुत्री शादी होकर मुलतान चली गई. कहते हैं कि वो पानी मुलतान गया. रैदास जी का भजन है:-

हरि सा हीरा छोड़कर, करे आन की आस,/ते नर जनपुर जाहिंगे, सत भावे रैदास।/रैदास रात न सोईये, छोड़ सकल प्रतिवाद,/कहे रैदास खलास चमारा...

संत रविदास जी ने कई रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करके नई राह दिखाई. वे एक महान समाज सुधारक व कर्मयोगी थे. उन्होंने मानव मात्र की सेवा एवं आत्म चिन्तन का पाठ पढ़ाया और समाज में समानता की भावना पैदा करके ऊंच-नीच, छुआ-छूत को समाप्त किया. उनकी वाणी आज भी हमारी पथ-प्रदर्शक है. अयोध्या में रामकोट मोहल्ले में उनका मंदिर है तथा हनुमान कुंड उनकी तपस्थली है. यहां पर अस्पृश्यता जैसी कोई वस्तु नहीं है. वे चर्मकार थे लेकिन प्रभु के पास थे उनका पद है 'प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी'

आईये उनके जन्म दिवस पर नमन करते हुए, उनके आदर्शो को ग्रहण करके प्रेरणा लें, ईश्वर भक्ति में मन लगावें व धर्म-समाज, राष्ट्र की उन्नति में योगदान दें.

विश्व स्नेह समाज का आगामी परिचर्चा

विचारों के अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कहां तक जायज? मार्च 2013

अपने विचार २० फरवरी २०१३ तक अधिकतम २५० शब्दों में एक फोटो के साथ प्रेषित कर देवें. अच्छे विचारों को उपहार प्रदान किया जाएगा

हिन्दीत्तर भाषी रचनाकार

अब के मानव

अब मानव प्रेम खो बैठा,
परस्पर विश्वास खो बैठा।
सारा समाज खड़ा है, क्रोध ईर्ष्या पर
जरा-सा चिंता नहीं अपनी नई पीढ़ियों पर
चारो ओर नकली दोस्त है,
सौहार्दता का भाव भी नहीं है।
हंसना हंसाने का छाया भी नही है।
सिर्फ डर और डराना है, सारा जग भर।
तन मन में ईर्ष्या ही ईर्ष्या है,
गाली-गलौज करता जा रहा है
मार-पीट झगड़ा करता जा रहा है
मानव आज मानव रुप का शैतान बना है।

श्रीमती एम.बि.सावित्रम्मा

हिन्दी शिक्षिका

पतिः इ.पालाक्षप्पा, एम.ए-हिन्दी, बी.एड.,

संपर्कः यगटि मल्लिकार्जुन निलय, म.न. बी-01, वाटर टैंक, स्वामी विवेकानन्द, बढ़ावणे सतिह, गोपाल, शिमोगा, कर्नाटक

वंदे मातरम (लघु कथा संग्रह)

जय श्रीराम काव्य संग्रह

रचनाकारः
आचार्य यदुमणि कुम्हार
प्रकाशकः
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, उ.प्र. -211011 मो09335155949

साहित्य मेला-13 के साहित्यकारों का चयन

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की एक बैठक संस्थान के कार्यालय में सम्पन्न हुई. बैठक की अध्यक्षता संस्थान की अध्यक्षा विजया लक्ष्मी विभा ने की. बैठक में निर्णायक मंडल के सभी सदस्य भी उपस्थित रहे. बैठक में साहित्य मेला-2013 में सम्मानित होने वाले साहित्यकारों के नाम को अंतिम रुप दिया गया. विजय लक्ष्मी विभा ने बताया कि डॉ. चन्द्रप्रकाश आर्य-हरियाणा को साहित्य सम्राट, श्रीमती हेमा उनियाल-नई दिल्ली को विद्यावाचस्पति, डॉ. हितेश कुमार शर्मा-बिजनौर, उ.प्र. को विधिश्री की उपाधि से तथा श्री रामआसरे गोयल-सिम्भावली, श्रीमती सुरेखा शर्मा-गुड़गांव, डॉ. वारिस अंसारी-फतेहपुर, नरेन्द्र नाथ लाहा-ग्वालियर, श्रीमती मिथिलेश जैन-आगरा, श्री मुखराम माकड़ 'माहिर'-रावतसर, राजस्थान, डॉ० नरेश पाण्डेय चकोर-पटना, डॉ. शिववंश पाण्डेय-पटना, यदुमणि कुम्हार-पं.सिहभूमि, झारखंड को विहिसास अलंकरण, किसान दीवान-छत्तीसगढ़ को समाजश्री, सुकीर्ति भटनागर-पटियाला को हिन्दी सेवी सम्मान, रामदरश विश्वासी-अम्बेडकरनगर, उ.प्र. को कैलाश गौतम सम्मान, श्री ब्रज बिहारी ब्रजेश-खीरी, उ.प्र को किशोरी लाल सम्मान, श्री आर.मुत्थुस्वामी-छत्तीसगढ़ व डॉ. दिवाकर दिनेश 'गौड़'-गोधरा, गुजरात को हिन्दी सेवी सम्मान, डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया-नई दिल्ली को दोहाश्री से अलंकृत किया जाएगा. कार्यक्रम 17 फरवरी 2013 को हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद में आयोजित होगा. सभी चयनित साहित्यकारों को हार्दिक बधााई.

हिन्दी सेवी न्यायमूर्ति प्रेमशंकर गुप्त अब नहीं रहे

24 जनवरी 2013. संस्थान के कार्यालय में न्यायमूर्ति प्रेमशंकर गुप्त के निधन पर एक शोक सभा का आयोजन किया गया। शोक सभा में पत्रिका के संरक्षक एवं सुप्रसिद्ध ग़ज़लकार श्री बुद्धिसेन शर्मा ने कहा-'हमने एक हिन्दी सेवी न्यायमूर्ति को खो दिया. न्यायमूर्ति जीवनपर्यन्त न्याय व हिन्दी सेवा में लीन रहे.' संस्थान की अध्यक्ष विजय लक्ष्मी विभा ने कहा-'हमने एक हिन्दी की सच्चा साथी खो दिया.'

संस्थान सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने कहा 'हिन्दी व न्याय का एक मसीहा आज हमारे बीच से चला गया. जीवन पर्यन्त न्यायमूर्ति प्रेम शंकर गुप्त हिन्दी के उत्थान व न्याय के लिए समर्पित रहे. उनकी हिन्दी सेवा अवर्णनीय है. उनके निधन से हिन्दी सेवियों को गहरा धक्का लगा है.'

शोक सभा में डॉ. दुर्गा शरण मिश्र, राजकिशोर भारती, महेन्द्र कुमार अग्रवाल, सोसन एलिजाबेथ, रेवा नन्दन द्विवेदी, श्रीमती जया, मनमोहन सिंह कुशवाहा आदि उपस्थित थे।

प्रयास काव्य संग्रह

रचनाकारः
ओम प्रकाश त्रिपाठी

प्रकाशकः विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-९३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, उ.प्र.-२११०११

आपकी डाक

उत्कृष्ट सम्पादन हेतु बधाई

परम आदरणीय श्री द्विवेदी जी,सादर प्रणाम 'अत्र कुशलं तत्रास्तु' पत्रिका का अंक प्राप्त हुआ. बाजारवाद के जाल में फंसता हमारा समाज व उसका दुष्प्रभाव पर केन्द्रित सम्पादकीय हमें सचेत रहने की शिक्षा प्रदान करती है, बहुत ही उपयोगी लगी, ज्ञानपूर्ण महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करने वाले लेख, रचना, समाचार, समीक्षा आदि पत्रिका के स्तर को बढ़ाने में बहुत ही महत्वपूर्ण हो रहे हैं. इस उत्कृष्ट सम्पादन हेतु बधाई, साधुवाद स्वीकारें।

शम्भू प्रसाद 'भट्ट' स्नेहिल
नन्दादेवी , गोपेश्वर, चमोली, उत्तराखंड

++++++++++++++++++++++++

नववर्ष २०१३ की मंगलकामना

नए साल की नई खुशबू
नई सफलताओं से जीवन महकाएं
नई आशाओं की नई किरणें
नई उपलब्धियों के दीप जलायें
नया नया हो सब कुछ
नव हर्षोल्लास हो
नई उमंग नई तरंग
जीवन में नई नई हार बात हो।

सूरज तिवारी 'मलय'
ब्राहमण पारा, लोरमी, बिलासपुर, छ.ग.

+++++++++++++++++++++++

शुभ हो उसके लिए भी

वो, जो चुप-चाप जीवन बिता रहा है,
वक्त पर पानी-बिजली के बिल चुका रहा है।
टैक्स चोरी नहीं करता, हेरा-फेरी नहीं करता,
रिश्वत नहीं लेता, चापलूसी नहीं करता।
वो, जो बच्चों को कमेटी के स्कूल में पढ़ रहा है
बड़ी मुश्किल से घर-गृहस्थी को चला रहा है।
वो, जिसके पास न बंगला है, न कार है,
न ही कोई मंत्री उसका रिश्तेदार है।
वो, जो मन्दिर-मस्जिद के भेद को नहीं मानता,
किसी बन्दे से नफरत करना नहीं जानता।
वो, जो अंग्रेजी में अपनी बात नहीं कह सकता,
लेकिन अब और तकलीफ भी नहीं सह सकता।
उसका भी क्या किसी को कुछ ख्याल है?
कि शुभ हो उसके लिए भी, यह जो नया साल है।

प्रेम वोहरा ३५बी, गुप्ता कॉलोनी, दिल्ली-११००६

शुभ-दिपावली

जग जननी, जगदीश्वरी, जग की पालनहार।
दोनों हाथों दीप लिये, द्वार खड़ा संसार।
माता के दरबार में, बोलू, झुका के माथ।
बच्चे राह निहारते, चल मां मेरे साथ।
जिस जग को मां ने रची, देकर पावन प्यार।
द्वार-द्वार मां स्वयं चली, देने को उपहार।।
पग-पग में है दीप जले, दीपों का संसार।
सत्य, धर्म संदेश दे, दीपावली त्योहार।।
दीपावली यह कहती है, वे ही भाते मोय।
दिल में ऐसी ज्योति जले, दिल उजियारा होय।।

जय हिन्द-वन्दे मातरम्

लोग पहले खुब हंसेगे, फिर पत्थर बरसायेंगे।
मंजिल पर जब पैर पड़े, तब वे ही गले लगायेंगे।

राम कुमार वर्मा
प्रतापपुर चौक, अम्बिकापुर, छ.ग.

++++++++++++++++++++++++++

पत्रिका उत्तर-दक्षिण में समन्वय स्थापित करती है

आदरणीय गोकुलेश्वर द्विवेदीजी,
पत्रिका हिन्दीत्तर भाषी विशेषांक अक्टूबर अंक प्राप्त हुआ. आपने मेरा लेख 'भारत की सांस्कृतिक एकता साध्य और साधन' प्रकाशित करके मेरा लेखन कार्य का हौसला बढ़ा दिया है. इस अंक में आपने दक्षिण भारत के साहित्यकारों के लेख प्रकाशित किये हैं. दक्षिण में हिन्दी के पितामह नागप्पा जी मेरे परिचित थे. उनके साथ मेरी पत्र-मित्रता थी. डॉ. वी.रा. देवगिरी, पी.एम.जोशी, जे. बी.नागरत्नमा, सुनील परीट, सीतादेवी सबकी रचनाएं अच्छी लगीं. आपकी पत्रिका उत्तर दक्षिण में समन्वय है. आंध्र प्रदेश के प्रभाशंकर रंगा रेड्डी, चेन्नई के डॉ. बालशौरी रेड्डी, डॉ. शौरिराजन, डॉ. एन.चन्द्र शेखर नायर, डॉ. एम.शेषन आदि के साथ मेरी पत्र मित्रता है.

एस.बी.मुरकुटे,
क्रास नं.२, आनंद नगर, बड़गाव, बेलगाव, कर्नाटक

++++++++++++++++++++

परमारणीय सम्पादक महोदय,
पत्रिका का नवम्बर-१२ अंक मिला. आत्मीय स्मरण हेतु आभार. विश्व स्नेह समाज को पाकर उस दिन काफी साहित्यिक खुराक मिला मुझे. अंक में प्रकाशित सभी आलेख पठनीय रहे. विशेषकर इकबाल अहमद मंसूरी का आलेख, क्रांतिकारी वीर उपेक्षित क्यों मन को छू गया. आखिर कहां जा रहे हैं हम. संतोष शर्मा 'शान' ने भी 'सुरक्षा की दृष्टि में नारी' से जिन समस्याओं को उजागर किया है उस पर ध्यान देने की आवश्यकता है. अन्य स्थायी स्तम्भ भी अच्छे रहे. डॉ. तारा सिंह की कहानी 'आम के पेड़ में बबूल के कांटे कैसे उगे' ने जीवन की सच्चाई को उजागर किया है. कविताएं भी हृदय स्पर्शी रही. इस हेतु तमाम रचनाकारों को साधुवाद.

डॉ. सतीश चन्द्र 'राज', सोनभद्र, उ. प्र.

++++++++++++++++++++++

सादर द्विवेदी जी
नववर्ष की शुभकामनाएं. पत्रिका मिली. जानकर अच्छा लगा कि कुछ लोग अलग-अलग विषयों पर लिख रहे हैं. सिर्फ मुहब्बत, बेवफाई, चांद सितारे पर ही क्यों लिखा जाये और भी ग़म है जमाने में मुहब्बत के सिवा.

चमेली जुगरान, मयूर बिहार, दिल्ली

++++++++++++++++++++++

नया साल २०१३ मुबारक
नया साल फिर है नये पैरहन में,
सवेरे से चर्चा है ये अंजुमन में।
कहीं जाम से जाम टकरा रहे हैं,
कहीं कोई उलझा हुआ गुलबदन में।
बुझा न सके जिसको दरिया-समन्दर,
तपिश इतनी होती है दिल की अगन में।
नये साल में बस यही इल्तिजा है,
कि बरकत दे मौला गरीबों के धन में
यहां लोग हिल-मिल के दुख बांट लेंगे,
सलामत रहे प्यार अहले-वतन में।
क़लम में नहीं मेरे जादू-बयानी,
मज़ा है 'कुंवर' मेरे सादा-सुखन में।

कुंवर 'कुसुमेश', 4/738, विकास नगर, लखनऊ

+++++++++++++++++++++++

क्या है इरेक्टाइल डिसफंक्शन

यह बीमारी रक्त वाहिनियों या तंत्रिकाओं अथवा दोनों की कार्यप्रणालियों में गड़बड़ी आ जाने से उत्पन्न होती है. पुरुष जननांग की रक्त वाहिनियों में वसा जम जाने पर जननांग में रक्त प्रवाह समुचित रूप से नहीं हो पाता है जिसके कारण यौन संबंध के दौरान पुरुष लिंग में पर्याप्त कड़ापन नहीं आ पाता है. मधुमेह और उच्च रक्त दाब तथा इन रोगों की दवाईयों के सेवन, मानसिक तनाव, पर्यावरण प्रदूषण, मेरू रज्जू (स्पाइनल कार्ड) में चोट अथवा उससे संबंधित बीमारियों, हार्मोन संबंधी एवं आनुवांशिक विकारों के अलावा अधिक शराब एवं वसा युक्त भोजन के सेवन तथा धूम्रपान से कई पुरुषों में 'इरेक्टाइल डिस्फंक्शन' की समस्या उत्पन्न हो जाती है.

मधुमेह तथा उच्च रक्त चाप के मरीजों को यह समस्या अधिक होती है. मधुमेह के अधिक बढ़ जाने से रक्त नलिकायें सिकुड़ जाती हैं. अधिक रक्त चाप के मरीजों के अलावा धूम्रपान करने वालों एवं शराब तथा अधिक वसा युक्त भोजन करने वालों की रक्त नलिकायें कोलेस्ट्रॉल जम जाने के कारण संकरी हो जाती हैं और इन दोनों बीमारियों में पुरुष यौनांग की रक्त वाहिनियां प्रभावित हो सकती हैं और यह समस्या उत्पन्न हो सकती है.

'इरेक्टाइल डिस्फंक्शन' का एक अन्य कारण स्नायु तंत्र में गड़बड़ी आ जाना है. इस कारण पुरुष जननांग की रक्त वाहिकाओं को समय पर फैलने का संकेत नहीं मिल पाता है जिससे उनमें रक्त का तेज बहाव नहीं हो पाता है. इस समस्या के अनेक मामलों में मनोवैज्ञानिक कारण भी होते हैं जिसका पता मरीजों से बातचीत करके लगाया जाता है जबकि इस समस्या के शारीरिक कारणों का पता लगाने के लिये डॉप्लर विधि में हार्मोनों की संख्या का पता लगाने संबंधी रक्त परीक्षण एवं रिजिस्कैन विधि का इस्तेमाल किया जाता है. 'वियाग्रा' केवल उन्हीं मरीजों के लिए कारगर है जिनमें यह बीमारी गंभीर नहीं होती है और इनके इलाज के लिये शल्य क्रिया करने की जरूरत नहीं पड़ती. 'इरेक्टाइल डिस्फंक्शन' के इलाज के लिये आम तौर पर यौन समस्या पैदा करने वाले कारणों का पता लगाकर उन्हें दूर करना ही पर्याप्त होता है लेकिन कई बार सर्जरी की भी नौबत आ सकती है. 'इरेक्टाइल डिस्फंक्शन' के इलाज के लिये 'हारमोन रिप्लेसमेंट थेरेपी' का भी इस्तेमाल किया जा सकता है, लेकिन यह चिकित्सा तभी कारगर होती है जब मरीज के शरीर में टेस्टोस्टेरॉन नामक पुरुष हारमोन का स्तर कम होता है. ऐसे मरीजों को जरूरत के अनुसार बाहर से टेस्टोस्टेरॉन दिये जाते हैं.

वैसे तो पुरुष नपुंसकता के मुख्य कारण मानी जाने वाली बीमारी 'इरेक्टाइल डिस्फंक्शन' के मरीजों के लिये कई विकल्प मौजूद हैं, लेकिन किसी विकल्प को जल्दबाजी में अपनाने की बजाय मरीज को किसी सक्षम मनोवैज्ञानिक तथा योग्य यूरोलॉजिस्ट से मिलकर तथा आवश्यक जांच कराकर अपनी बीमारी के सही कारणों का पता लगा लेना चाहिये ताकि सही विकल्प को ही अपनाया जा सके, अन्यथा लाभ के स्थान पर नुकसान हो सकता है।(मेडी मीडिया)

हिन्दी भाषियों का दिमाग ज्यादा तंदुरुस्त

यदि आप हिन्दी भाषी है और आधुनिक सभ्यता के शौकिन होकर बिना जरूरत अंग्रेजी बोलने की लत पाल चुके हैं तो जरा सावधान हो जाइए. वैज्ञानिकों ने कहा है कि अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी भाषा बोलने से मस्तिष्क अधिक चुस्त दुरुस्त रहता है. विज्ञान पत्रिका 'करंट साइंस' में प्रकाशित अनुसंधान पर मस्तिष्क विशेषज्ञों का कहना है कि अंग्रेजी बोलते समय दिमाग का सिर्फ बांया हिस्सा सक्रिय रहता है. जबकि हिन्दी बोलते समय मस्तिष्क के दोनो हिस्से सक्रिय हो जाते है. जिससे दिमागी स्वास्थ्य तरोताजा रहता है. अनुसंधान से जुड़ी डाक्टर नंदिनी सिंह के अनुसार मस्तिष्क पर अंग्रेजी और हिन्दी भाषा के प्रभाव का असर जानने के लिए छात्रों के एक समूह को लेकर अनुसंधान किया गया. इस अध्ययन के पहले चरण में छात्रों से अंग्रेजी में जोर जोर से बोलने को कहा गया और फिर हिन्दी में बात करने को कहा गया. इस समूची प्रक्रिया में दिमाग का एमआरआई किया जाता रहा. परीक्षण से पता चला कि अंग्रेजी बोलते समय छात्रों के दिमाग का सिर्फ बायां हिस्सा सक्रिय था, जबकि हिन्दी बोलते समय दिमाग के दोनों हिस्से सक्रिय हो उठे. ऐसा इसलिए होता है कि क्योंकि अंग्रेजी एक लाइन में सीधी पढ़ी जाने वाली भाषा है, जबकि हिन्दी के शब्दों में ऊपर-नीचे और बाएं-दाएं लगी मात्राओं के कारण दिमाग को इसे पढ़ने में अधिक कसरत करनी पड़ती है जिससे इसका दायां हिस्सा भी सक्रिय हो उठता है. इन डाक्टरों की राय है कि हिन्दी भाषियों को बातचीत में ज्यादातर अपनी भाषा का इस्तेमाल ही करना चाहिए और अंग्रेजी की जरूरत पड़ने पर.

साहित्य समाचार

साहित्यकार दिवस

भारत/विश्व में अलग-अलग विषयों/क्षेत्रों के महत्व को प्रतिपादित करने के लिए अलग-अलग दिवस निर्धारित है. जैसे 28 फरवरी-राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, 8 मार्च- अतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 1 मई-मजदूर दिवस इत्यादि इत्यादि. इसके अलावा महापुरुषों के जन्म अथवा निर्वाण दिवस. किन्तु साहित्यकारों के सम्मान अथवा उन्हें याद करने के कोई दिवस निर्धारित नहीं है. उन्हें व्यक्तिगत रूप से उनके जन्म अथवा निर्वाण दिवस पर स्मरण किया जाता है. इसके लिए साहित्यकार दिवस भी होना चाहिए जिस दिवस को स्वर्गीय साहित्यकारों को याद किया जा सके. इसके लिए 7 मई को जो विश्व कवि रविन्द्र नाथ टैगोर का जन्म दिवस है को प्रचलित किया जा सकता है. इस परम्परा की शुरुआत की जानी चाहिए. निवेदकः आचार्य शिवप्रसाद सिंह राजभर सिहोरा, जबलपुर, म.प्र. 483225 मो0 9424767707

डॉ. कथूरिया को आर्य विभूषण

दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर राव हरिश्चन्द्र आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट नागपुर द्वारा वैदिक विद्वान डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया को 'आर्य विभूषण' पुरस्कार से सम्मानित किया गया. उन्हें यह पुरस्कार हरियाणा सरकार के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने प्रदान किया. सम्मान में उन्हें 21 हजार रुपये, स्मृति चिन्ह, अभिनन्दन पत्र, शाल प्रदान किया गया.

इस अवसर पर डॉ. कथूरिया की पुस्तक 'न्याय दर्शन की मान्यताएं' नामक पुस्तक का विमोचन आचार्य श्री बलदेव जी ने किया. उक्त जानकारी चन्द्रशेखर शास्त्री, सम्पादक, अध्यात्म पथ ने दी.

'स्नेहिल' को साहित्य रत्न

चमोली, उत्तराखंड के लेखक शम्भु प्रसाद भट्ट 'स्नेहिल' को कर्नाटक की 'साहित्य सरोवर' पत्रिका द्वारा 'साहित्य रत्न' सम्मान से विभूषित किया गया. यह सम्मान जयसिंह अलवरी द्वारा सम्पादित काव्य संकलन 'राष्ट्र मन' के लिए प्रदान किया गया।

सतीश राज को विद्यावारिधि

सोनभद्र के साहित्यकार सतीश चन्द्र राज को उल्लेखनीय शैक्षणिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक सेवाओं के लिए साहित्यिक सांस्कृतिक कला संगम अकादमी, परियांवा, प्रतापगढ़ द्वारा विद्या वारिधि की मानद उपाधि से विभूषित किया गया. विदित हो कि डॉ० राज को 4 नवम्बर 2012 को सरिता लोक सेवा संस्थान, सुल्तानपुर द्वारा दैनिक जगत चर्चा सम्मान-2012 से भी विभूषित किया गया है. विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान परिवार की तरफ से उनको बधाई।

डॉ० मोहन तिवारी को विद्यासागर

भोपाल, म.प्र. के सुप्रसिद्ध साहित्यकार व संपादक कर्मनिष्ठा मासिक डॉ. मोहन तिवारी आनन्द को विक्रमशीला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार द्वारा उनकी सुदीर्घ हिन्दी सेवा, सारस्वत साधना तथा राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के आध ाार पर विद्यासागर की उपाधि से अलंकृत किया गया. डॉ. तिवारी को पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई.

सुरेखा शर्मा पुरस्कृत

गुड़गांव हरियाणा, की लेखिका सुरेखा शर्मा को उनकी पुस्तक 'रिश्तों का एहसास' (कहानी संग्रह) के लिए हरियाणा साहित्य अकादमी एवं बाबू बालमुकुन्द गुप्ता पत्रकारिता एवं साहित्य संरक्षण परिषद रेवाड़ी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक कार्यक्रम में पुरस्कृत किया गया. पुरस्कार में उनको ग्यारह सौ रुपये नकद, शाल व प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया.

'आलराऊंड गौरव' की उपाधि

फरीदकोट, पंजाब की साहित्यिक संस्था 'आलराऊंड अकादमी की ओर से आठ साहित्यकारों ऋषिकेश के धमेश्वर दीक्षित, रतलाम के श्री रामचन्द्र गहलोत, पं. राधेश्याम शर्मा, नगरा के श्री सतीश जोशी, भूसावल के डी.एस.घोडेस्वार, लालपुर के श्री गाफिल स्वामी, रावतसर के श्री मुखराम माकड़ 'माहिर' और मैनपुरी के श्री सतीश चन्द्र शर्मा 'सुधाशु', को 'आलराऊंड गौरव' की उपाधि प्रदान की गई. उक्त जानकारी अमित कुमार लाडी ने एक विज्ञप्ति के माध्यम से दी.

समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान

संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष स्व० पवहारी शरण द्विवेदी की स्मृति में इस वर्ष से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान करने वाले समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान प्रदान किया जाएगा. इस सम्मान में **पाँच हजार एक रुपये नगद,** स्मृति पत्र प्रदान किए जाएँगें. प्रतिभागियों को अपने समाज सेवा का प्रामाणिक विवरण कार्यालय के पते पर 30 सितम्बर 2013 तक.

एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद-211011, उ.प्र.

साहित्य समाचार

कलमकारों का किया गया सम्मान

भिलाई. छत्तीसगढ़. विश्व हिन्दी साहित्य सेवाा संस्थान, इलाहाबाद एवं काव्य सरिता साहित्य समिति, भिलाई के संयुक्त तत्वावधान में दीपावली मिलन एवं सम्मान समारोह का आयोजन महिला समाज भवन, में किया गया.

आयोजन के मुख्यअतिथि वरिष्ठ साहित्यकार रविशंकर कलौसिया थे. अध्यक्षता प्रख्यात रचनाकार एवं संचार प्रमुख अशोक सिंघई ने की. विशिष्ट अतिथि कवयित्री शीला शर्मा थी. विशेष अतिथि आर.सी. मुदलियार, रतनलाल गोयल, शारदा प्रसाद पाटकर थे. इस अवसर पर प्रेस क्लब भिलाई के नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं कथाकार शिवनाथ शुक्ल, अशोक सिंघई तथा शीला शर्मा का सम्मान शाल एवं श्रीफल से किया गया. काव्य सरिता साहित्य समिति के अध्यक्ष एवं विहिसासेस के हिन्दी सांसद आर. मुत्थुस्वामी ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की.

इस अवसर पर श्रीमती शीला शर्मा ने अपने उद्बोधन में शिवनाथ शुक्ल की उपलब्धियो ंपर प्रकाश डाला. मुख्य अतिथि रविशंकर कलौसिया ने शिवनाथ शुक्ल की अपनी कलम द्वारा दीर्घकाल तक पत्रकार के रूप में सेवा प्रदान करने के लिए उन्हें शुभकामनाएं दी. अपने उदबोधन में अशोक सिंघई ने शिवनाथ शुक्ला को कथाकार से बेहतर पत्रकार बताया. आभार प्रदर्शन आर. मुत्थुस्वामी ने किया तथा संचालन अशोक सोनी ने किया.

इस अवसर पर आयोजित काव्य गोष्ठी मं आर.सी.मुदलियार, एम.एल.वैद्य, चेलाराम पुराणिक, अशोक कुमार सोनी, शायर युसुफ, मछली शहरी, ओमप्रकाश जायसवाल और आर.मुत्थुस्वामी अदि ने अपनी रचनाएं पढ़ी.

भारापम ने छह विभूतियों को किया सम्मानित

महासंघ के हाथों सम्मानित होते संपादक केएन सिंह। छायाः कमाल अहमद

ओबरा, सोनभद्र. ओबरा में आयोजित 'पत्रकारिता अस्तित्व बोध नहीं बल्कि सामाजिक मिशन' विषयक संगोष्ठी के दौरान देश के कोने-कोने से आये मूर्धन्य संपादको, साहित्यकारों, प्रबुद्ध शिक्षकों समेत पत्रकारों व समाज के गणमान्यों की उपस्थिति में पत्रकारिता के लिए के.एन. सिह, समाज सेवा के लिए रमेश सिंह यादव, साहित्य के क्षेत्र में ओम प्रकाश त्रिपाठी, शिक्षा के क्षेत्र में चन्द्रमणि शुक्ला, संगीत के क्षेत्र में संगीतज्ञ रवीन्द्र नाथ पाण्डेय और नशा निषेध के क्षेत्र में अखिलेश पाण्डेय, ओबरा इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य एस.पी. सिंह को उत्कृष्ट प्रबन्धन के लिए तथा वयोवृद्ध सम्पादक हंसनाथ पाण्डेय 'हंस' को जर्जरावस्था में भी कलम का दामन थामे रखने के लिए मुख्य अतिथि म. मो. मा. पत्रकारिता संस्थान के निदेशक डा. राम मोहन पाठक और भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. भगवान प्रसाद उपाध्याय ने सम्मानित किया। समारोह के संयोजक एवं भाराप महासंघ के जिलाध्यक्ष कमाल अहमद ने स्वागत एवं आभार व्यक्त किया। संचालन आर.पी उपाध्याय ने किया।

समीक्षा

डॉ० कृष्ण मुरारी शर्मा द्वारा रचित

जन्मजात विषपायी ठहरे

प्रस्तुत काव्य संग्रह 'जन्मजात विषपायी ठहरे कुल 104 पृष्ठ का है. जिसमें कुल 58 रचनाए है. इस संग्रह मूल्य 150 रुपये है तथा इसे साहित्य साधना संसद, ग्वालियर ने प्रकाशित किया है. वैसे तो मैं व्यक्तिगत रुप से डॉ० शर्मा को एक नाटककार के रुप में जानता था. लेकिन इस पुस्तक के माध्यम से उनके काव्य संसार को भी जानने समझने का मौका मिला है. शर्मा जी अपने काव्य रस की धारा में गहरे चिंतन को रेखांकित किया है. बानगी के तौर पर

कोई फूल नोंचले डाली से, मन दुखता है/बाग रहे आतंकित माली से, मन दुखता है।

++++++++++++++++++++

विज्ञापनों की धुन्ध में सच खो रहा रोज-रोज/बढ़ती अखबारी खुशहाली से, मन दुखता है।

'उम्र भले ही छोटी मिले से देखिए-

पेट भर रोटी मिले, आनन्द है

भूख भी छोटी मिले, आनन्द है।

पसीना बहा जो मिले, सन्तोष दे,

छदाम न खोटी मिले, आनन्द है।

छल-फरेबी का गणित आये नहीं,

अक्ल भले मोटी मिले, आनन्द है।

'क्यो अस्त है आदमी' में शर्मा जी ने आज के आदमी की सच्चाई को बयां करते हुए लिखा है:-

आज बहुत व्यस्त है आदमी,

बड़ा अस्त-व्यस्त है आदमी।

स्पर्धा करता था सूर्य से,

आज क्यों अस्त है आदमी?

बड़े हवाई महल बनाता है,

भीतर से पस्त है आदमी।

खुद को पहचानता नही,

कैसा अलमस्त है आदमी।

पाप से डरो! कविता के माध्यम से रचनाकार ने आम आदमी को अच्छी सीख दी है

डरो, तो बस पाप से डरो,

या कि अपने आप से डरो।

कोई फूल कुचलना मत,

निरीहों के शाप से डरो।

अनुचित आपा-धापी क्यों,

असहज रक्तचाप से डरो।

यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत संग्रह पाठकों को इसे पढ़ने को प्रेरित करेगा. अच्छे विचारों, भाषा शैली से ओत प्रोत यह संग्रह सराहनीय है.

हरि जोशी-67

प्रस्तुत संग्रह 'हरि जोशी-67' जिसके रचनाकार हरि जोशी जी है तथा पहले-पहल प्रकाशन, भोपाल ने इसे प्रकाशित किया है. 155 पृष्ठीय इस संग्रह का मूल्य 250/रुपये मात्र है. हिन्दी व अंग्रेजी में साथ-साथ अनुदित इस संग्रह में कुल 67 रचनाएं है. प्रत्येक कविता एक तरफ हिन्दी व दूसरी तरफ अंग्रेजी में है. शायद उनका अमेरिका निवास ही इसका मूल कारण है. ताकि अंग्रेजी जानने वाले भी इसे पढ़ सके. मेरी व्यक्तिगत जानकारी में यह अपने तरह की पहली पुस्तक है. इस संग्रह की पहली रचना है- 'क्योंकि मेरे पास ये कविताएं है' कविताओं को स्वयं के लिए एक सखा, कष्ट, संघर्ष की साथी, उदासी की मीत, माना है.

अब मुझे भय नहीं रहा,/न आग का, न पानी का न आंधी तूफान का/क्योंकि मेरे पास ये कविताएं है।/

पवित्र शिप्रा में कवि ने शिप्रा नदी की गुणवत्ता का बखान किया है-

शोषण धुलाई, धूप सब सहती रही शिप्रा/ दुनिया के पाप माथ ले बहती रही शिप्रा/सावन में हवेली बन, प्रति चैत वह जर्जर सी, वैशाख में खण्डहर सी ढहती रही शिप्रा।

आज आदमी जानवरों को अपने स्वाद के लिए हलाल करता रहता है. मुर्गा भी उनमें से एक है. जानवरों के प्रति अपने प्रेम का दर्शाती 'कुकडू कूं' - उस दूकान में प्रतिदिन/हजारों मुर्गे कर दिये जाते हैं हलाल,/किंतु किसी को भी होता नहीं मलाल/एक को मिल जाता स्वादिष्ट भोजन/दूसरे को पैसा/तीसरे को काटकर खाने का/ खेल ही ही है ऐसा।/किंतु जब जब मैं/प्रातः भ्रमण के समय/उस दूकान के सामने से निकला/मुर्गे ने निस्पृह भाव से बांग दी/ताकि सभी उठे।/ एक दिन मैंने मुर्गे से पूछा/'जानते हो सुबह-सुबह कुकडू कूं करके/स्वयं ही जीवन को छोटा कर लेते हो, प्रतीक्षारत कसाई तो उठ जाता है पहली बांग पर ही/अवसर पाते तुम्हें स्वर्ग का रास्ता दिखाता है.'/मुर्गा बोला/'आप ठीक कहते हैं,/अपने प्राण की बाजी लगाकर/मैं दुनिया का भला ही करता हूं।/मेरा लक्ष्य मात्र इतना/कि लोगों को ब्रह्ममुहूर्त में उठ जाना आवश्यक है/क्रेता भी पेट भरें, विक्रेता जेब भरे।/सभी लगे कामों में/हम अपना काम करें/वे अपना काम करें/कर्मरत रहूंगा जब तक/जगाकर रहूंगा कई, भले वे मेरा काम तमाम करें।'

इंसान को अपने कर्त्तव्य में लीन रहने को सीख देती यह कविता बहुत ही सराहनीय है. इस संग्रह की अन्य कविताएं भी काफी अच्छी हैं. संग्रह बहुत ही बढ़िया और सराहनीय है. रचनाकार को हार्दिक बधाई.